RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

16 मन की शक्ति से तनाव मुक्त जीवन की ओर...

11 ब्रह्माकुमारीज़ का नशामुक्ति अभियान प्रेरणादायक...

वर्ष-13, अंक-07, हिन्दी (मासिक), जुलाई 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 17:50

गुरु पूर्णिमा विशेष

ज्ञान, योग और पवित्रता से आत्म जागृति का महापर्व है गुरु पूर्णिमा

मनुष्य आत्माओं के परम सद्गुरु हैं परमात्मा शिव

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु,
गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म
तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

शिव आमंत्रण, आबूरोड। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। गुरु पूर्णिमा का पर्व केवल किसी व्यक्ति विशेष के सम्मान का दिन नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, आत्मजागृति और आत्म परिवर्तन का महापर्व है। यह वह अवसर है जब मनुष्य अपने जीवन में प्रकाश देने वाली शक्ति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। आज जब संसार भौतिक प्रगति के शिखर पर है, तब भी मनुष्य के जीवन में शांति, संतोष और आनंद का अभाव दिखाई देता है। ऐसे समय में गुरु पूर्णिमा का संदेश मानवता के लिए नई दिशा लेकर आता है। ब्रह्माकुमारीज के आध्यात्मिक ज्ञान के अनुसार वर्तमान समय में परमात्मा शिव स्वयं मानव आत्माओं के सद्गुरु बनकर उन्हें अज्ञानता से ज्ञान की ओर, अशांति से शांति की ओर और पतन से उत्थान की ओर ले जा रहे हैं। परमात्मा शिव न तो किसी धर्म विशेष के हैं और न किसी संप्रदाय के। वे सम्पूर्ण मानवता के परमपिता, शिक्षक और सद्गुरु हैं।

आत्मा क्यों भटक रही है?

आज का मनुष्य अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। तनाव, अवसाद, क्रोध, भय, असुरक्षा, संबंधों में कटुता, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, नैतिक मूल्यों का ह्रास इन सभी समस्याओं का मूल कारण आत्म-विस्मृति है। जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है तो वह शरीर, पद, पैसा, प्रतिष्ठा और संबंधों में सुख खोजने लगती है। लेकिन इन सबके बावजूद उसे स्थायी संतुष्टि नहीं मिलती। परमात्मा शिव आत्माओं को उनकी खोई हुई पहचान वापस दिलाते हैं।

राजयोग: सद्गुरु से मिलने की विधि

गुरु पूर्णिमा केवल पूजा या परिक्रमा का पर्व नहीं है। यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का अवसर है। राजयोग सिखाता है मैं आत्मा हूँ और मेरा परमात्मा से सीधा संबंध है। जब आत्मा परमात्मा की स्मृति में स्थित होती है तब उसके भीतर शांति आती है। मनोबल बढ़ता है। तनाव कम होता है। निर्णय शक्ति बढ़ती है। जीवन में सकारात्मकता आती है। इसीलिए राजयोग को आत्मिक ऊर्जा का पावर हाउस कहा जाता है।

गुरु दक्षिणा क्या दें?

गुरु पूर्णिमा पर लोग पुष्प, वस्त्र, दान और भेंट अर्पित करते हैं, लेकिन परमात्मा शिव कहते हैं सच्ची गुरु दक्षिणा है- अपने दोषों का त्याग, क्रोध को शांति में बदलना, नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलना, व्यसनों से मुक्त होना, श्रेष्ठ संकल्पों को अपनाना, पवित्र जीवन जीना, यही परमात्मा को सबसे प्रिय भेंट है। जीवन की बुराइयों को परमात्मा को दान देकर, अर्पित कर हम व्यर्थ के बोझ से मुक्त हो सकते हैं। बोझ से मुक्त मानव ही जीवन का असली आनंद ले सकता है।

परमात्मा शिव कहते हैं...
हे आत्मा, तू शरीर नहीं, बल्कि शांति, प्रेम, सुख, पवित्रता और शक्ति स्वरूप चेतन ज्योति है। यही आत्मज्ञान सभी आध्यात्मिक शिक्षाओं का आधार है।

गुरु पूर्णिमा का आध्यात्मिक रहस्य

पूर्णिमा का चंद्रमा अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाता है। उसी प्रकार सद्गुरु आत्मा के भीतर भरे अज्ञान, भ्रम, भय और दुख के अंधकार को समाप्त कर ज्ञान का प्रकाश भर देते हैं। आज मनुष्य ने संसार को जान लिया है, लेकिन स्वयं को नहीं जाना। उसने विज्ञान की खोज कर ली, लेकिन आत्मा की पहचान खो दी है। यही कारण है कि बाहरी सुख-सुविधाओं के बावजूद मन अशांत है।

सद्गुरु की पहचान क्या है?

- जो अज्ञान को समाप्त करे।
- जो आत्मा का परिचय दे।
- जो परमात्मा से संबंध जोड़ दे।
- जो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे विकारों से मुक्ति का मार्ग बताए।
- जो मानव जीवन को श्रेष्ठता, पवित्रता और दिव्यता की ओर ले जाए।
- जो वर्तमान समय की वास्तविकता और भविष्य की दिशा स्पष्ट करे।
- ये सभी विशेषताएं केवल परमात्मा शिव में हैं, इसलिए उन्हें 'सद्गुरु' कहा गया है।

सद्गुरु परमात्मा : जीवन रूपांतरण के दिव्य मार्गदर्शक

सद्गुरु परमात्मा केवल ज्ञान देने वाले शिक्षक नहीं, बल्कि आत्मा के भाग्य को श्रेष्ठ बनाने वाले दिव्य मार्गदर्शक हैं। वे मनुष्य को बाहरी आकर्षणों से ऊपर उठाकर आंतरिक मूल्यों की ओर प्रेरित करते हैं। परमात्मा शिव का ज्ञान आत्मा को आत्म सम्मान, निर्भयता और संतुष्टि की अनुभूति कराता है। उनका दिव्य मार्गदर्शन मनुष्य को परिस्थितियों का दास नहीं, बल्कि उनका स्वामी बनना सिखाता है। सद्गुरु के ज्ञान से जीवन में विवेक, धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। यही आध्यात्मिक शक्ति व्यक्ति को स्वयं के साथ-साथ समाज और विश्व के कल्याण का माध्यम बनाती है। सद्गुरु शिव का साथ जीवन को नई दिशा, नई प्रेरणा और नई ऊंचाइयां प्रदान करता है।

गुरु पूर्णिमा का वास्तविक उत्सव

गुरु पूर्णिमा का वास्तविक उत्सव मंदिरों, आश्रमों या समारोहों तक सीमित नहीं है। यह तब पूर्ण होता है जब आत्मा अपने सद्गुरु के ज्ञान को जीवन में धारण करती है। आज आवश्यकता केवल गुरु की पूजा करने की नहीं, बल्कि गुरु के बताए मार्ग पर चलने की है। परमात्मा शिव मानवता को ज्ञान, योग और पवित्रता का मार्ग दिखाकर एक श्रेष्ठ, सुखी और शांतिमय विश्व की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर हम अपने जीवन में आत्मज्ञान का दीपक प्रज्वलित करें, परमात्मा शिव को अपना सद्गुरु स्वीकार करें और राजयोग के माध्यम से अपने जीवन को शांति, शक्ति, प्रेम और आनंद से भर दें।

विश्व परिवर्तन का आधार : आत्म परिवर्तन

ब्रह्माकुमारीज का संदेश है- हम बदलेंगे, युग बदलेगा। विश्व परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति के स्वयं के परिवर्तन से होती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों, संस्कारों और कर्मों को श्रेष्ठ बना ले तो समाज और राष्ट्र स्वतः बदल जाएंगे। आज संसार को हथियारों की नहीं, संस्कारों की आवश्यकता है। संसार को प्रतियोगिता की नहीं, सहयोग की आवश्यकता है। संसार को भय की नहीं, आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है।

गुरु पूर्णिमा का संदेशः सद्गुरु वह नहीं जो केवल मार्ग दिखाए, बल्कि वह है जो आत्मा को उसकी खोई हुई पहचान वापस दिलाकर परमात्मा से मिला दे। परमात्मा शिव ही वह सद्गुरु हैं, जो आज सम्पूर्ण मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा रहे हैं।

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मिले ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधि

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ सोशल सर्विस विंग, स्पार्क विंग, फाइनेंस फ्रेटरनिटी सेवा विंग, डिज़ाइन एवं इनोवेशन विंग और देशभर के विभिन्न सेवाकेंद्रों के प्रतिनिधियों को राष्ट्रपति भवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने आध्यात्मिक मूल्यों, निःस्वार्थ सेवा एवं राष्ट्र निर्माण के प्रति ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की प्रतिबद्धता को साझा किया। समाज में शांति, नैतिक मूल्यों, सकारात्मक जीवनशैली तथा आध्यात्मिक जागरूकता के प्रसार हेतु चलाए जा रहे विभिन्न सेवा कार्यों की जानकारी भी दी। राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शांति, मूल्यनिष्ठ जीवनशैली तथा सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में किए जा रहे योगदान की सराहना की। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया।

राष्ट्रीय अभियंता सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू राज (राज.)।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर आंध्र प्रदेश के मुख्य वन संरक्षक श्रीकांत नाथ रेड्डी, इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन की सीजीएम सुश्री अंजलि भावे, नेपाल के अवसंरचना विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव इंजी. राम के. श्रेष्ठ, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी, महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, इंजीनियरिंग विंग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल, भिलाई सेवाकेंद्रों की प्रभारी बीके आशा दीदी, बीके पीयूष, बीके भारत भूषण सहित देशभर से आए प्रतिभागी मौजूद रहे।

कैड प्रोग्राम के तहत सात दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में सात दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है। इसमें मधुमेह तथा उसे जुड़ी बीमारियों के स्थायी इलाज के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। शुभारंभ पर कैड कार्यक्रम के डॉ. सतीश गुप्ता, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी, अतिरिक्त महासिचव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, बीके डॉ. प्रताप मिड्डा, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल, बीके बाला बहन ने अपने विचार व्यक्त किए।

लंदन : जरूरतमंदों की सेवा अभियान

शिव आमंत्रण, लंदन।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गो धर्मिक के संस्थापक हनुमान दास एवं स्वयंसेवकों के साथ मिलकर जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन सेवा अभियान चलाया। इस दौरान संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने सभी प्राणियों के सुख, शांति और कल्याण, प्रेम, दया और निःस्वार्थ सेवा के महत्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि सच्ची आध्यात्मिकता तभी सार्थक होती है जब वह मानवता की सेवा और दूसरों के जीवन में खुशी लाने का माध्यम बने। स्वयंसेवकों ने भोजन तैयार कर शहर के विभिन्न क्षेत्रों में जरूरतमंद लोगों के बीच वितरित किया। सेवा अभियान के दौरान प्रेम, सहयोग और मानवीय संवेदनाओं की भावना स्पष्ट रूप से देखने को मिली। इस अवसर पर लोगों ने समाज में प्रेम, सद्भाव और सहयोग की भावना को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

रोटरी इंटरनेशनल ग्लोबल हॉस्पिटल ब्लड बैंक ने 500 रक्तवीरों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, आबूरोड (राज.)।

आबू रोड सहित सिरोही जिले के आस पास के क्षेत्रों में होने वाली दुर्घटनाओं में जरुरतमंद लोगों की जान बचाने वाले रक्तदाताओं को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 500 रक्तवीरों को सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय रक्तदान दिवस पर ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रॉमा सेन्टर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में रक्तवीरों का सम्मान करते हुए दूसरे लोगों को भी रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया गया। आबू पिण्डवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग होने के साथ ही यह क्षेत्र एक्सीडेंटल जोन होने से आये दिन लोगों को रक्त की जरूरत होती है। ऐसे में आपके खून की एक बूंद जरूरतमंद व्यक्ति की जिन्दगी बचाने का कार्य करती है। ऐसे में आप सभी रक्तदान करें तथा दूसरों को भी प्रेरित करें।

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि हमारा जीवन दूसरों के काम आ जाए इससे अच्छा क्या हो सकता है। रक्तदान एक पुण्यदान होता है। जिससे हम खुद स्वस्थ तो होंगे ही हमारे खून से दूसरे को जीवनदान मिलता है। ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. प्रताप मिड्डा ने कहा कि ग्लोबल हॉस्पिटल का प्रयास लोगों की जान बचाना है। यहां के ब्लड बैंक से लोगों को बहुत राहत मिलती है।

इस दौरान डॉ. सतीश गुप्ता, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल, ब्लड बैंक प्रभागी धर्मेंद्र सिंह, ट्रॉमा सेन्टर की पैथोलॉजिस्ट डॉ. सपना भंडारी, बीके अरुणा, बीके विशाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में कांग्रेस प्रदेश महासचिव हरीश चैधरी, ट्रॉमा सेंटर के कार्यकारी ट्रस्टी रश्मिकांत सहित बड़ी संख्या में रक्तदाता मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ के 90 वर्ष पूर्ण : आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा विषय पर संत सम्मेलन आयोजित

धर्मसत्ता ही विश्व को सही दिशा देकर कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है

शिव आमंत्रण, राजकोट/गुजरात।

ब्रह्माकुमारीज़ राजकोट द्वारा संस्था के गौरवशाली नवदशकोत्सव (90 वर्ष) के उपलक्ष्य में 'हैप्पी विलेज' रिट्रीट सेंटर में 'आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा' विषय पर भव्य एवं दिव्य संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संपूर्ण सौराष्ट्र से लगभग 200 संतों, महंतों एवं धर्माचार्यों ने भाग लेकर सनातन संस्कृति, आध्यात्मिकता एवं विश्व कल्याण पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में गुजरात ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके भारती दीदी, कर्नाटक से पधारी राजयोगिनी बीके वीणा दीदी, महामंडलेश्वर आशुतोष महाराज (अयोध्या धाम), डॉ. रविदर्शन महाराज (भुवनेश्वरी शक्तिपीठ, गोंडल), स्वामी गौरीकांतानंद महाराज (रामकृष्ण आश्रम, राजकोट), स्वामी आनंदस्वरूप (स्वामीनारायण मंदिर, गोंडल), लालजी बापू (प्रेरणाधाम आश्रम, जूनागढ़), समण श्रुतप्रज्ञ महाराज (पीस ऑफ माइंड फाउंडेशन), महंत स्वामी अखंड ब्रह्मानंद महाराज (राजराजेश्वरी आश्रम, नर्मदा), संत मस्तराम बापू (सीताराम अन्न क्षेत्र, शापर), संत अश्विन बापू (गायत्री शक्तिपीठ, वांकानेर), महंतश्री हरेश प्रगट बापू तथा कथाकार राजेंद्रभाई जोशी सहित अनेक संत-महंत उपस्थित रहे।

सम्मेलन का शुभारंभ सभी संतों द्वारा 'सनातन संस्कृति की पवित्र दीपज्योति' प्रज्वलित कर किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत कुमारी हीर, विहा एवं पवित्रा ने शिव भोले भंडारी पर आकर्षक नृत्य प्रस्तुति देकर सभी को शिव परमात्मा की स्मृति का अनुभव कराया।

समण श्रुतप्रज्ञजी ने सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए चार महत्वपूर्ण सूत्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम 20 मिनट ईश्वर-स्मृति एवं ध्यान का अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने सेवाभाव, एकता और धर्मसत्ता को संस्कृति संरक्षण का आधार बताया।

राजयोगिनी बीके वीणा दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में विज्ञान विनाशकारी दिशा की ओर बढ़ रहा है, इसलिए धर्मसत्ता को सशक्त बनाना समय की आवश्यकता है। केवल धर्मसत्ता ही विश्व को सही दिशा देकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। सिकंदर के उदाहरण द्वारा उन्होंने बताया कि संसार की सभी उपलब्धियां क्षणिक हैं, जबकि परमात्म स्मृति ही जीवन का वास्तविक धन है। उन्होंने 'मनमनाभव' का संदेश देते हुए आत्मस्वरूप में स्थित होकर परमात्मा का स्मरण करने का आह्वान किया।

आध्यात्मिकता ही आपस में जोड़ सकती है-
राजयोगिनी बीके भारती दीदी ने कार्यक्रम की सफलता का श्रेय निराकार परमात्मा को अर्पित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता ही मानवता को एक सूत्र में जोड़ सकती है। कार्यक्रम के प्रारंभ में अहमदाबाद से पधारी डॉ. बीके दामिनी बहन ने मधुर भक्तिमय गीतों की प्रस्तुति देकर वातावरण को आध्यात्मिक भावनाओं से सराबोर कर दिया। अंत में बीके कश्यपभाई गढ़िया ने सभी संतों, अतिथियों एवं श्रद्धालुओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

संतों के विचार

» स्वामी आनंदस्वरूप महाराज ने कहा कि सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत भाषा एवं उसमें रचित धर्मग्रंथों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सभी धर्मप्रेमियों से भाषा और शास्त्रों के संरक्षण हेतु आगे आने का आह्वान किया।

» महामंडलेश्वर आशुतोष महाराज ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के साथ अपने वर्षों पुराने संबंधों का उल्लेख करते हुए संस्था की निःस्वार्थ सेवाओं की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से नशामुक्ति अभियान को राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान बताया।

माई मोबाइल माई फ्रेंड सेमीनार आयोजित

शिव आमंत्रण, अटलादरा, बड़ोदरा। अटलादरा स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा "माई मोबाइल माई फ्रेंड" एवं "कर्म एटीएम" विषय पर एक विशेष प्रेरणादायी सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 250 श्रोताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक जीवन मूल्यों की प्रेरणा प्राप्त की।

मुख्य वक्ता के रूप में मुंबई बोरीवली सेवाकेंद्र से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं सड़क सुरक्षा प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके कविता दीदी ने कहा कि आधुनिक जीवन में मोबाइल का संतुलित एवं सकारात्मक उपयोग तथा श्रेष्ठ कर्मों का संचय सुखमय और सफल जीवन का आधार है। उन्होंने मोबाइल को जीवन का साधन बनाकर उसका श्रेष्ठ उपयोग करने तथा कर्मों की शक्ति को समझकर जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने पर बल दिया।

नवीन भाई ओझा (पूर्व रजिस्ट्रार, एम.एस. यूनिवर्सिटी) ने कहा कि संस्था के संपर्क में आए उन्हें अभी अधिक समय नहीं हुआ है, किंतु ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रमों से प्राप्त प्रेरणाओं ने उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विपिन भाई पटेल (बीपीसी चेयरमैन) ने कहा कि जब तक परिवार के बड़े स्वयं अपनी आदतों में सुधार नहीं करेंगे, तब तक बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित नहीं हो पाएंगे। उन्होंने सुझाव दिया कि मोबाइल के संतुलित उपयोग और कर्मों से संबंधित ऐसी शिक्षाएं स्कूलों एवं कॉलेजों के युवाओं तक भी पहुंचनी चाहिए, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

सेमिनार में प्रोजेक्टर के माध्यम से कर्मों की तुलना तन, मन, धन और संबंधों के विभिन्न एटीएम कार्डों से करते हुए सुखमय जीवन जीने की कला को सरल एवं प्रभावशाली ढंग से समझाया गया। "कर्म एटीएम" सत्र में बताया गया कि जैसे एटीएम में जमा की गई राशि आवश्यकता पड़ने पर उपयोगी बनती है, उसी प्रकार श्रेष्ठ कर्म जीवन में सुख, शांति और सफलता के रूप में फल प्रदान करते हैं।

"सुहाना सफर" सत्र में जीवन को एक यात्रा मानते हुए उसके विभिन्न पड़ावों को सकारात्मकता, उत्साह और संतुलन के साथ जीने की प्रेरणा दी गई। वहीं "माई मोबाइल माई फ्रेंड" सत्र में मोबाइल का स्वामी बनकर उसका श्रेष्ठ उपयोग करने, उसकी लत से बचने तथा उसे जीवन को सरल एवं उन्नत बनाने वाले मित्र के रूप में अपनाने के व्यावहारिक उपाय बताए गए। मनमोहक चित्रों, वीडियो प्रस्तुति तथा सरल एवं सहज भाषा शैली के कारण सभी श्रोता पूरे कार्यक्रम के दौरान मंत्रमुग्ध रहे। प्रवीण भाई गुप्ता (अध्यक्ष, रामलीला कमेटी), डॉ. हेमंत भाई पांचाल (जनरल सर्जन) तथा हसमुख भाई पटेल (अजंता डेकोरेटर्स) उपस्थित रहे।

नवनिर्वाचित राज्यपाल का किया स्वागत

शिव आमंत्रण, कोलकाता/प. बंगाल। ब्रह्माकुमारीज़ ईस्टर्न ज़ोन मुख्यालय, कोलकाता म्यूज़ियम सेंटर की प्रभारी राजयोगिनी मुन्नी दीदी ने लोक भवन में नवनिर्वाचित राज्यपाल आरएन रवि का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर वरिष्ठ बीके बहनें बीके अंजली बहन (कोलकाता म्यूज़ियम), बीके सुप्रिया बहन (मुख्यालय माउंट आबू), बीके मधु बहन एवं बीके सिंह भाई उपस्थित रहे।

केरल के मुख्यमंत्री से की शिष्टाचार भेंट

शिव आमंत्रण, तिरुवनंतपुरम, केरल। ब्रह्माकुमारीज़ की बहनों ने केरल के नव नियुक्त मुख्यमंत्री वीडी सतीशन से शिष्टाचार भेंट कर शुभकामनाएं दी। बीके मिन्नी बहन ने मुख्यमंत्री को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट किया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित नेतृत्व समाज में सकारात्मक परिवर्तन और जनहितकारी विकास का आधार बनता है। बहनों ने संस्था द्वारा किए जा रहे समाजसेवी कार्यों की सराहना की।

बाबा ने त्रिमूर्ति मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू कराया

रियल लाइफ

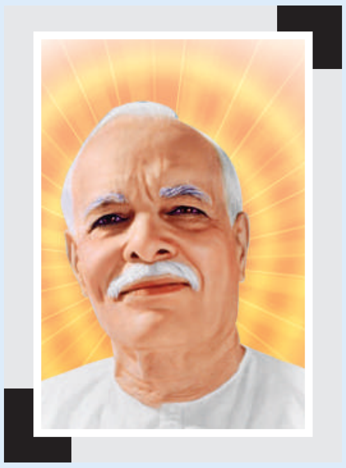

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बाबा यह भी समझाते थे कि शिव बाबा के वचन अनमोल हैं। ज्ञान का एक वचन एक रत्न से भी ज्यादा कीमती है। साँसारिक रत्न तो एक जन्म तक मनुष्य के पास रह सकते हैं और उनसे सभी प्रकार के सुख भी नहीं मिलते परन्तु ज्ञान को तो अविनाशी रत्न कहा जाता है क्योंकि ज्ञान द्वारा जन्म-जन्मान्तर के लिये सम्पूर्ण स्वर्गिक सुखों की प्राप्ति होती है और वहां न अकाल मृत्यु होती है, न ही बुढ़ापा या रोग ही मनुष्य को दुःखी करते हैं। अतः यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तब तो यह ज्ञान ऐसा उच्च है कि इसे सोने के पन्ने पर यदि संभव हो तो रत्नों से बनी स्याही से छपवाया जाए। परन्तु इस कलियुगी अन्धेर नगरी में जबकि मिथ्या ज्ञान फैला हुआ है, इसका मूल्य पहचानने वाले ही कहां हैं? ये ज्ञान प्रायः लुप्त हो चुका है, तभी तो शिव बाबा को स्वयं आना पड़ा है।

त्रिमूर्ति मासिक पत्रिका का प्रकाशन

ब्रह्माकुमारी संदेशी जी ने लिखा है उन्हीं दिनों बाबा ने एक मासिक पत्रिका भी प्रारम्भ करने का निर्देश दिया था। उसका नाम 'त्रिमूर्ति' इसीलिए रखा गया था कि लोगों को बताया जा सके कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के भी रचयिता जो परमपिता परमात्मा शिव हैं, उन्हीं द्वारा दिया हुआ ज्ञान इसमें संकलित है। इस पत्रिका में कार्टून, रेखा-चित्र तथा चित्र-लेख इत्यादि भी होते थे जिससे विषय रुचिकर रीति से स्पष्ट हो जाते थे। ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ता जी ने लिखा है जन-मन की ईश्वरीय सेवा की जा रही थी। इस प्रकार साहित्य द्वारा भी अन्य धार्मिक संस्थाओं से निमन्त्रण मिलने पर उनके मंच से भी ईश्वरीय सन्देश दिया जा रहा था। देहली तथा अन्य नगरों में अनेक संस्थायें सम्मेलनों में भी आमन्त्रित करती थी, वहां भी लोगों को परमपिता परमात्मा का परिचय तथा समय की पहचान दी जाती थी।

देहली में विश्व धर्म-सम्मेलन

नवम्बर, 1957 में एक विश्व धर्म-सम्मेलन देहली में लाल किले में हुआ था। उसमें तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी, प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी तथा अन्य कई मन्त्रियों ने भी भाग लिया था और बहुत से देशों से, विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि भी पधारे थे। यह एक बहुत ही विशाल सम्मेलन था।

इस अवसर पर बाबा के निर्देश से रंगीन चित्र छपवाए गए थे, जिनमें सबसे ऊपर विश्व-रचयिता परमपिता शिव परमात्मा और उनके नीचे ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का चित्र था और इन तीनों के नीचे सृष्टि के पांच युगों का चक्र अंकित था।

चित्र के दोनों ओर के स्तम्भों में रचयिता और रचना का अर्थात् परमपिता परमात्मा शिव, उनकी सर्वप्रथम रचना त्रिदेव का तथा इस मनुष्य-सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का संक्षिप्त परिचय था। इनके साथ ही सुनहरी एवं चामदी जैसे रंग में छपे हुए मुख पृष्ठ वाली एक बहुत ही सुन्दर पुस्तक छपवाई गयी थी। इसमें यह बताया गया था कि यद्यपि आज भारत को राजनीतिक तौर पर तो स्वराज्य प्राप्त हुआ है तथापि यहां सुख का साम्राज्य नहीं है क्योंकि देशवासी काम, क्रोधादि विकारों के वशीभूत हैं। देश के नेताओं ने धरना, अनशन तथा असहयोग आन्दोलनों द्वारा जो स्वराज्य प्राप्त किया है वह मृगतृष्णा के समान है, उससे सम्पूर्ण सुख की कामना करना व्यर्थ है। अतः स्वराज्य के लिए बापू गांधी जी का जो स्वप्न था, वह पूरा नहीं हो सकता। अब विश्व के बापू परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा, भारत को पुनः सतयुगी, पावन एवं सुख-शान्ति सम्पन्न, स्वर्णिम भारत बनाने के लिए सहज ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। ज्ञान-बल, योग-बल तथा पवित्रता बल अर्थात् चरित्र-बल से ही सच्चा स्वराज्य स्थापित हो सकता है। .... क्रमशः

अव्यक्त इशारे

स्वयं को आत्मा समझो, तब मन हल्का हो जाएगा और बाबा का साथ सहज अनुभव होगा

राजयोगिनी दादी हृदयमोहनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

वर्तमान समय में राजयोगी भाई-बहनों को केवल कर्मयोगी नहीं, बल्कि विदेही और उपराम अवस्था का अभ्यास करना चाहिए। यही अवस्था आत्मा को परिस्थितियों, संबंधों और प्रकृति के प्रभाव से ऊपर उठाकर परमात्म समीपता का अनुभव कराती है। विदेही अवस्था का अर्थ शरीर छोड़ देना नहीं है, बल्कि शरीर में रहते हुए भी शरीर के आकर्षण और देह-अभिमान से न्यारा रहना है। आत्मा जब स्वयं को केवल शरीर, नाम, पद या संबंधों के आधार पर नहीं पहचानती, तब वह विदेही अवस्था का अनुभव करने लगती है।

आज अधिकांश दुःख और अशांति का कारण देह-अभिमान है। 'मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?', 'मेरी बात क्यों नहीं मानी गई?', 'मुझे सम्मान क्यों नहीं मिला?'ये सभी भाव देह-चेतना से उत्पन्न होते हैं। जब आत्मा अपने सत्य स्वरूप, ज्योति-बिंदु चेतन सत्ता की स्मृति में रहती है, तब वह इन बंधनों से ऊपर उठ जाती है। 'स्वयं को आत्मा समझो, तब मन हल्का हो जाएगा और बाबा का साथ सहज अनुभव होगा।

उपराम अवस्था का अर्थ है- व्यर्थ आकर्षणों, उलझनों और मानसिक खींचतान से ऊपर उठ जाना। इसका अर्थ संसार से भागना नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए भी उससे प्रभावित न होना है। कमल का फूल कीचड़ में रहते हुए भी उससे अछूता रहता है। इसी प्रकार राजयोगी आत्मा संसार में रहते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है, लेकिन मन को व्यर्थ बातों में नहीं फँसाती।

बाबा की याद से बनेगी विदेही स्थिति

विदेही अवस्था का सबसे सरल मार्ग है निरंतर परमात्म स्मृति। जब मन बार-बार शिवबाबा की याद में जाता है, तब आत्मा को ऐसी शक्ति प्राप्त होती है कि देह और देह की दुनिया का प्रभाव कम होने लगता है। जितना मन बाबा के पास रहेगा, उतना ही वह संसार की उलझनों से मुक्त होगा। इसलिए केवल योग के समय ही नहीं, बल्कि कर्म करते हुए भी याद का अभ्यास आवश्यक है। चलते-फिरते, सेवा करते, बोलते और कार्य करते हुए यदि मन में यह स्मृति रहे कि 'मैं आत्मा हूँ और बाबा मेरा साथी है', तो विदेही अवस्था सहज बनने लगती है।

व्यर्थ को समाप्त करें

उपराम अवस्था का सबसे बड़ा शत्रु है व्यर्थ चिंतन। कौन क्या सोचता है, किसने क्या कहा, भविष्य में क्या होगा—ऐसी बातें मन की शक्ति को समाप्त कर देती हैं। जो बीत गया उसे समाप्त करो और जो सामने है उसे बाबा की श्रीमत से श्रेष्ठ बनाओ। व्यर्थ विचारों को महत्व देना अर्थात अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को नष्ट करना। जो आत्मा व्यर्थ से मुक्त हो जाती है, वही सहज रूप से उपराम अवस्था का अनुभव करती है।

साक्षीभाव का अभ्यास

विदेही और उपराम अवस्था के लिए साक्षीभाव अत्यंत आवश्यक है। हर दृश्य को एक नाटक के दृश्य की तरह देखो। जो कुछ हो रहा है, वह विश्व-नाटक का एक भाग है। जब आत्मा साक्षी बनकर देखती है, तब वह प्रतिक्रिया नहीं करती, बल्कि समाधान खोजती है। इससे मन शांत रहता है और परिस्थिति का प्रभाव कम हो जाता है। विदेही और उपराम अवस्था वर्तमान समय की विशेष आवश्यकता है। यह अवस्था आत्मचेतना, साक्षीभाव, व्यर्थ-मुक्त स्थिति और निरंतर परमात्म स्मृति से विकसित होती है। शरीर में रहते हुए भी आत्मा न्यारी और प्यारी बन सकती है। जब मन बाबा के प्रेम और याद में स्थित रहता है, तब संसार की कोई भी परिस्थिति उसे विचलित नहीं कर सकती। आज प्रत्येक राजयोगी का पुरुषार्थ यही हो कि वह देह-अभिमान से मुक्त होकर आत्म-अभिमान में स्थित रहे, व्यर्थ से ऊपर उठे और हर कर्म में बाबा का साथी बनकर चलें।

प्रेरणापुंज

एकरस अवस्था का पहला आधार है आत्मचेतना

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

राजयोगी जीवन का लक्ष्य केवल ज्ञान सुनना या सेवा करना नहीं है, बल्कि ऐसी श्रेष्ठ अवस्था बनाना है जो परिस्थितियों, व्यक्तियों और समय के प्रभाव से डगमगाए नहीं। सच्चा राजयोगी वही है जिसकी स्थिति 'एकरस' हो अर्थात् हर परिस्थिति में स्थिर, शांत, संतुष्ट और आनंदमय। जो आत्मा स्वयं में स्थित रहती है, उसे कोई भी बात हिला नहीं सकती।

एकरस अवस्था का अर्थ है कि मन में कभी अत्यधिक खुशी और कभी अत्यधिक दुःख का उतार-चढ़ाव न हो, बल्कि आत्मिक स्थिति सदा समान और स्थिर बनी रहे। एकरस अवस्था का पहला आधार है आत्मचेतना। जब हम स्वयं को शरीर, पद, संबंध या भूमिका समझते हैं, तब छोटी-छोटी बातें भी मन को प्रभावित करती हैं। लेकिन जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप—शांति, पवित्रता और शक्तिशाली ज्योति-बिंदु की स्मृति में रहती है, तब बाहरी परिस्थितियों का प्रभाव कम होने लगता है।

व्यर्थ संकल्पों पर पूर्ण विराम

हमारी अधिकांश शक्ति व्यर्थ चिंतन में नष्ट हो जाती है। किसी ने क्या कहा, क्यों कहा, आगे क्या होगा, ऐसा क्यों हुआ, इन प्रश्नों में उलझकर मन कमजोर हो जाता है। एकरस अवस्था बनाने के लिए मन को व्यर्थ से मुक्त करना आवश्यक है। जब भी व्यर्थ विचार आएं, तुरंत स्वयं से पूछें 'क्या यह विचार मेरी शक्ति बढ़ा रहा है?' यदि नहीं, तो उसे वहीं समाप्त कर दें। शक्तिशाली आत्मा वही है जो अपने विचारों की मालिक हो।

स्वमान में रहना

अपने स्वमान में रहो, दूसरों से मान मत मांगो। जब हम दूसरों से प्रशंसा, सम्मान या स्वीकृति की अपेक्षा रखते हैं, तब मन परिस्थितियों पर निर्भर हो जाता है। कोई सम्मान दे तो खुशी, न दे तो दुःख। यह स्थिति एकरस नहीं कही जा सकती। स्वमान में स्थित आत्मा जानती है कि मैं परमात्मा की संतान हूँ, गुणों और शक्तियों का खजाना हूँ। ऐसा स्वमान मन को स्थिरता प्रदान करता है।

स्वीकारभाव और समायोजन

एकरस अवस्था का एक महत्वपूर्ण गुण है स्वीकारभाव। हर व्यक्ति अपने संस्कारों के अनुसार कार्य करता है। यदि हम हर किसी को बदलने की कोशिश करेंगे, तो मन में अशांति उत्पन्न होगी। जो आत्मा दूसरों की विशेषताओं को देखती है और उनकी कमजोरियों को सहजता से स्वीकार कर लेती है, वह संबंधों में भी सुखी रहती है और मन से भी हल्की रहती है। समायोजन शक्ति एकरसता की पहचान है। पानी की तरह बनें, जो हर पात्र में समा जाता है लेकिन अपनी शीतलता नहीं खोता। यदि मन बार-बार बाबा से जुड़ता रहे, तो आत्मा को ऐसी शक्ति मिलती है कि परिस्थितियाँ उसे प्रभावित नहीं कर पातीं। एकरस अवस्था केवल अभ्यास से नहीं, बल्कि परमात्म शक्ति से बनती है। जैसे मोबाइल को नियमित चार्जिंग चाहिए, वैसे ही आत्मा को भी नियमित योग की आवश्यकता है। अमृतवेले का योग, दिनभर ट्रैफिक कंट्रोल और कर्म करते हुए याद का अभ्यास आत्मा को स्थिर और शक्तिशाली बनाता है।

संतुष्टता : एकरसता की पहचान

संतुष्टता सबसे बड़ा खजाना है। जो आत्मा हर परिस्थिति में संतुष्ट रहती है, वह कभी अशांत नहीं होती। संतुष्टता का अर्थ आलस्य नहीं, बल्कि जो प्राप्त है उसके प्रति कृतज्ञ रहकर श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना है। संतुष्ट आत्मा तुलना नहीं करती, शिकायत नहीं करती और परिस्थितियों से संघर्ष नहीं करती। वह हर स्थिति में कल्याण देखती है। एकरस अवस्था बनाना समय की आवश्यकता है। इसके लिए आत्मचेतना, स्वमान, व्यर्थ-मुक्त स्थिति, स्वीकारभाव, संतुष्टता और निरंतर परमात्म स्मृति को जीवन में धारण करना होगा।

समाजसेवा प्रभाग : संगम प्रतिज्ञा अभियान

युवा सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और आत्म-जागरूकता से जीवन को श्रेष्ठ दिशा दे सकते हैं

शिव आमंत्रण, गंगटोक/सिक्किम।

ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा सिक्किम के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संगम प्रतिज्ञा अभियान के तहत प्रेरणादायी सत्रों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं युवाओं में नैतिक मूल्यों, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास तथा आध्यात्मिक चेतना का विकास करना है।

इसमें समाज सेवा प्रभाग के बीके ईवी गिरीश भाई ने कहा कि जीवन में सफलता के साथ-साथ संस्कार, चरित्र और आध्यात्मिक मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक है। सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और आत्म-जागरूकता के माध्यम से युवा अपने जीवन को श्रेष्ठ दिशा दे सकते हैं तथा समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान निभा सकते हैं। सत्रों के दौरान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को बड़ों के सम्मान, पारिवारिक मूल्यों, पीढ़ियों के मध्य सामंजस्य, सामाजिक उत्तर दायित्व तथा मूल्यनिष्ठ जीवनशैली के महत्व से अवगत कराया गया।

प्रतिभागियों को यह भी प्रेरणा दी गई कि वे अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाकर समाज के लिए आदर्श बनें। "संगम प्रतिज्ञा अभियान" को विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से उत्साहपूर्ण सहभागिता प्राप्त हुई। बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने श्रेष्ठ संस्कारों को अपनाने, परिवार एवं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने तथा नशामुक्त एवं मूल्यनिष्ठ जीवन जीने का संकल्प लिया।

समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक बीके बीरेन्द्र भाई, सुनील भाई, प्रकाश भाई तथा सोनम बहन सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। सभी ने इस अभियान की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बात दें कि समाज सेवा प्रभाग द्वारा संचालित ये कार्यक्रम शिक्षा संस्थानों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के जागरण का प्रभावी माध्यम बन रहे हैं। इन प्रयासों के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ का परमात्म संदेश तथा मानवीय मूल्यों की ज्योति समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँच रही है, जिससे एक सशक्त, संस्कारित और सकारात्मक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

नर्स मानवता की सच्ची रक्षक हैं

शिव आमंत्रण, पुणे। अंतर्राष्ट्रीय नर्सेज डे पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जगदंबा भवन में विशेष प्रेरणादायी सम्मेलन का आयोजन किया गया। नर्सः मानवता की सच्ची रक्षक विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में नर्सों के मानसिक, आध्यात्मिक एवं सेवा भाव के सशक्तिकरण पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ वक्ता बीके कल्पना बहन ने कहा कि नर्सें केवल मरीजों की शारीरिक देखभाल ही नहीं करतीं, बल्कि अपने प्रेम, करुणा और सेवा भाव से उन्हें मानसिक संबल भी प्रदान करती हैं। उन्होंने नर्सों को राजयोग मेडिटेशन को अपनाने की प्रेरणा दी। बीके सुनंदा दीदी ने कहा कि सेवा कार्य के दौरान धैर्य, सहनशीलता और आत्मबल की आवश्यकता होती है। डॉ. एकनाथ पवार सहित 150 से अधिक नर्स व विद्यार्थियों ने भाग लिया।

आईआईटी : सेल्फ टू सर्विस विषय पर व्याख्यान

गंगटोक (सिक्किम)। आईआईटी एलुमनी फाउंडेशन की वार्षिक आम बैठक के अवसर पर गंगटोक में निष्काम कर्म-सेल्फ टू सर्विस विषय पर दो अर्द्धदिवसीय आध्यात्मिक सत्र आयोजित किए गए। सत्रों का संचालन ओम शांति रिट्रीट सेंटर से पधारी बीके वर्णिका बहन और ब्रह्माकुमारीज़ गंगटोक की बीके सोनम बहन ने किया। कार्यक्रम में लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें आईआईटी के पूर्व छात्र, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स तथा सशस्त्र बलों के सेवानिवृत्त एवं कार्यरत अधिकारी शामिल थे। सत्रों के दौरान कर्मयोग एवं राजयोग ध्यान के माध्यम से समर्पण, अनासक्ति और आंतरिक स्थिरता के साथ कर्म करने की कला पर प्रकाश डाला गया।

मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता से ही मानवता का भविष्य सुरक्षित है : प्रो. परमार

शिव आमंत्रण, कोल्लम (केरल)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राज्य स्तरीय मीडिया सेमिनार में मीडिया की भूमिका, मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता तथा वैश्विक शांति के विषय पर गहन विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न मीडिया संस्थानों के मीडिया कर्मियों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि मानवता का संदेशवाहक है। शब्दों में समाज और विश्व का भविष्य गढ़ने की शक्ति होती है। इसलिए पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक चेतना, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को सशक्त बनाना भी होना चाहिए। डी. जयकृष्णन ने कहा कि शांति भारत की सबसे अमूल्य देन है। भारतीय संस्कृति सदैव विश्व को शांति, सह-अस्तित्व और आध्यात्मिक मूल्यों का संदेश देती रही है। आज के समय में मीडिया इन मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। शिवमोल ने कहा कि मीडिया लोगों को जोड़ने और समाज में संवाद स्थापित करने का सशक्त मंच है। मीडिया विंग की उपाध्यक्ष बीके सरला बहन, राष्ट्रीय संयोजक बीके शांतानु भाई, वरिष्ठ पत्रकार विशाल यादव, वरिष्ठ पत्रकार प्रियंका कौशल, प्रो. सोमनाथ बड़नेरे ने भी आध्यात्मिक मूल्यों और मीडिया के सकारात्मक उपयोग पर अपने विचार साझा किए। अंत में प्रतिभागियों ने संकल्प लिया कि वे पत्रकारिता के माध्यम से सत्य, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनेंगे।

आध्यात्मिकता में है वर्तमान की समस्याओं का समाधान

शिव आमंत्रण, दार्जिलिंग/सिलिगुड़ी।

ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा देशभर में आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक जागरूकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रसार हेतु विभिन्न अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी क्रम में दार्जिलिंग में आयोजित "स्वच्छ और स्वस्थ समाज" अभियान तथा सिलिगुड़ी में आयोजित "संगम" अभियान ने समाज के विभिन्न वर्गों को सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान स्वच्छता, स्वास्थ्य जागरूकता, पारिवारिक मूल्यों तथा व्यसनमुक्त समाज के निर्माण पर विशेष बल दिया गया। वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान और उनके अनुभवों को समाज की अमूल्य धरोहर बताते हुए युवाओं को उनसे प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया। इन अभियानों में बड़ी संख्या में नागरिकों, विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं समाजसेवियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समाज सेवा प्रभाग के बीके ई.वी. गिरीश भाई ने कहा कि आज के समय में मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन और नशे की बढ़ती प्रवृत्तियाँ समाज के लिए गंभीर चुनौती बन रही हैं। इन समस्याओं का समाधान आध्यात्मिक जागरूकता, सकारात्मक चिंतन और राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से संभव है।

स्वच्छ और स्वस्थ समाज अभियान के तहत अनेक कार्यक्रम आयोजित

अभियान सामाजिक समरसता बढ़ाने में निभा रहा महत्वपूर्ण भूमिका

कार्यक्रमों में उपस्थित लोगों ने स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज के निर्माण, व्यसनमुक्त जीवनशैली अपनाने तथा पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का संकल्प लिया। प्रतिभागियों ने कहा कि ऐसे अभियान समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने और लोगों को आत्मिक रूप से सशक्त बनाने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ समाज सेवा प्रभाग द्वारा संचालित ये अभियान देशभर में आध्यात्मिक जागरण, नैतिक मूल्यों के संवर्धन तथा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संपादकीय

चिकित्सक शरीर ही नहीं, मन और आत्मा के भी संरक्षक

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस केवल चिकित्सकों के सम्मान का अवसर नहीं है, बल्कि यह मानव सेवा, करुणा और समर्पण की उस भावना को नमन करने का दिन है, जिसके बल पर लाखों लोगों को नया जीवन मिलता है। चिकित्सक रोगी के शरीर का उपचार करते हैं, पीड़ा को कम करते हैं और जीवन को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति में चिकित्सक को भगवान का दूसरा रूप माना गया है। वर्तमान समय में चिकित्सा विज्ञान ने अभूतपूर्व प्रगति की है। अनेक जटिल रोगों का उपचार संभव हुआ है, जीवन प्रत्याशा बढ़ी है और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हुआ है। फिर भी यह भी एक सच्चाई है कि शारीरिक रोगों के साथ-साथ मानसिक तनाव, अवसाद, चिंता, भय और असंतोष जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। इसका कारण यह है कि मनुष्य ने शरीर की देखभाल पर तो ध्यान दिया, लेकिन मन और आत्मा के स्वास्थ्य को अपेक्षित महत्व नहीं दिया। ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक ज्ञान के अनुसार मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि एक चेतन आत्मा है। जब आत्मा अपने मूल गुणों- शांति, प्रेम, सुख, पवित्रता और शक्ति से दूर हो जाती है, तब मानसिक और भावनात्मक असंतुलन उत्पन्न होता है। यही असंतुलन आगे चलकर अनेक शारीरिक समस्याओं का कारण भी बनता है। इसलिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए शारीरिक उपचार के साथ आध्यात्मिक सशक्तिकरण भी आवश्यक है। राजयोग ध्यान व्यक्ति को आत्म-जागरूकता, सकारात्मक चिंतन और आंतरिक शांति का अनुभव कराता है। अनेक चिकित्सक आज चिकित्सा के साथ-साथ मेडिटेशन, सकारात्मक सोच और तनाव प्रबंधन को भी स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार मान रहे हैं।

बोध कथा/जीवन की सीख

प्रभु का ध्यान

एक अमीर व्यापारी थे, जिनका नाम सुखीलाल था। सुखीलाल सुबह उठकर स्नान करने के बाद नियमित प्रभु का ध्यान भजन करते थे। फिर समय पर दुकान खोल कर बैठ जाते थे। उनकी ईमानदारी के चर्चे चारों तरफ थे। जब उनके बच्चे जवान हो गए तो उन्होंने पिताजी का काम संभाल लिया। सुखीलाल मन ही मन सोचने लगे कि अब 60 वर्ष की आयु हो गई है, ऐसे में दुकान का लालच छोड़कर क्यों नहीं पूरा समय ईश्वर के ध्यान और जन सेवा में लगाया जाए। लेकिन उनका मन कहता, अभी तो नाती पोतों को

पढ़ाना-लिखाना है। उनके विवाह करने हैं। इन सबसे निपट जाने के बाद ही दुकान छोड़ने के बारे में सोचना ठीक रहेगा।

इसी उधेड़बुन में वह एक दिन सुबह टहलने जा रहे थे। सड़क पर एक सफाई करने वाली महिला झाड़ू लगा रही थी। सुखीलालजी को सड़क पर चलते हुए देखकर महिला ने कहा- सेठजी आप एक तरफ हो जाइए। बीच में रहेंगे तो आपके ऊपर धूल पड़ जाएगी। एक तरफ हो जाएंगे तो धूल से बचे रहेंगे। महिला के इन शब्दों ने सेठजी की आंखें खोल दी। उन्हें भी महसूस होने लगा कि दो नावों में सवार होने वाले का कभी कल्याण नहीं होता है। उन्होंने तुरंत दुकान की चाबी अपने बेटों को सौंपते हुए कहा- मैंने इतने साल कमाने में बिता दिए हैं अब शेष जीवन कमाए हुए धन से लोगों की सेवा करना चाहता हूं और प्रभु का ध्यान-भजन करना चाहता हूं। यह सुनकर उनके बेटे को बुरा तो लगा, लेकिन परिवारजन ने सुखीलाल को सभी दायित्व से मुक्त कर दिया। कुछ ही दिन में सुखीलाल भक्ति और सेवा में डूब चुके थे।

संदेश: मनुष्य जन्म में संभावना है, आप जितना महान होना चाहें, जितना ऊंचा उठना चाहें उठ सकते हैं। जितना नीचे गिरना चाहें गिर भी सकते हैं। अपना जीवन ईश्वर के ज्ञान से, ध्यान से, सेवा से, परोपकार से, पुण्य कार्यों से जितना भरना चाहें उतना भर सकते हैं। पुण्यकर्म करके ऊंचा उठना यह मनुष्य जन्म का तप है। यह शरीर विषयभोग के लिए नहीं मिला। यह शरीर मिला है परमात्मा का सुख और शुद्ध आनंद लेने के लिए। अच्छे कृत्य करते-करते हृदय शुद्ध होता जाएगा। हृदय जितना शुद्ध होगा, उतना शांत रहेगा और जितना शांत रहेगा उतना शांतस्वरूप परमात्मा के करीब आ जाएगा। इसके लिए केवल परमात्मा से लगन और प्रेम की जरूरत है। बाकी काम तो भगवान कर देते हैं।

मेरी कलम से

राम सिंह चौहान (76), यादव नगर, रोहिणी, दिल्ली

राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से छूटा मांसाहार, जीवन बन गया आनंदमय

34 साल से संयम पथ पर चल रहा, बेटी बनी ब्रह्माकुमारी

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

मैं वर्ष 1992 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर नियमित रूप से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। मेरी धर्मपत्नी (युगल) भी इस ईश्वरीय ज्ञान में पूरी तरह से सहभागी हैं। पहले मैं मांसाहारी था, लेकिन जब से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं मेरा पूरा जीवन ही बदल गया है। अब तो रोज सुबह 3.30 बजे से ही दिनचर्या शुरू हो जाती है। पिछले 34 साल से सात्विक भोजन ही ग्रहण करता हूं। घर में ही पाठशाला चलती है। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मेरी एक बेटी ब्रह्माकुमारी है। जिसने अपना जीवन तो श्रेष्ठ और महान बनाया ही है। साथ ही हजारों लोगों को जीवन जीने की कला सिखाने के निमित्त बनी है।

मैं बचपन से ही गीता पढ़ता था और हमेशा सत्य बोलता था। शुरू में जब ब्रह्माकुमारीज़ में जाना शुरू किया तो यहां ज्ञान की नई और अनोखी बातें सुनकर आश्चर्य होता था, साथ ही विश्वास ही हैं। वर्ष 2003 से मेरे जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। जब गहराई से राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया, स्वयं रातजयोग का अभ्यास करना शुरू किया तो अनुभूति हुई कि यह सत्य ज्ञान है। राजयोग सबसे बड़ा योग है। जिससे हम आत्माएं परमपिता शिव परमात्मा से मिलन मना सकती हैं।

अब तो ऐसे लगता है जहां जाता हूं वहां भगवान मेरे साथ हैं। भगवान ने गीता में कहा है कि मैं किसी वेद-शास्त्र से नहीं मिलता हूं, जब मैं इस धरा पर आता हूं तो स्वयं अपना परिचय देता हूं। भावना का भाड़ा देता हूं, लेकिन मिलता नहीं हूं। साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर संदेश देता हूं।

मेरे जीवन का यही अनुभव है कि राजयोग मेडिटेशन परमात्मा को अनुभव करने, उन्हें समझने, उनसे बातें करने का एकमात्र जरिया है। परमपिता परमात्मा ही हम सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक और परम सद्गुरु हैं। जब तक उनसे योग नहीं लगाएंगे आत्मा पर जन्मों-जन्म की विकर्मों की जो मैल चढ़ी है वह दूर नहीं होगी। योग से यही आत्मा पवित्र बनेगी।

आत्मगत चैतन्यता द्वारा पवित्रतम दृष्टि से पवित्रतम सृष्टि

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 96

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। मूल्यपरक जीवन का व्यवहार पक्ष जब मर्यादित आचरण के अनुकरण एवं अनुसरण को प्रायोगिक स्तर पर आत्मसात करने की पवित्रतम स्थिति के साथ अवस्था और स्वरूप में स्थापित होने के उच्चतम मानदण्ड तक पहुँचने में उपलब्धिपूर्ण सफलता अर्जित कर लेता है तब साधक के लिए मर्यादित आचरण के द्वारा धर्म और कर्म की साधना से साध्य प्राप्ति पहुंचने का लक्ष्य पूर्ण हो जाता है। व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व की उच्चतम अवधारणा का केन्द्रीय भाव मानवीय दृष्टि में दूरदृष्टि के समावेश से सृजित होता है जिससे कल्याणकारी दृष्टिकोण की सार्थकता से सिद्ध स्वरूप में धर्म की गरिमामयी उपस्थिति को सहज स्वीकारोक्ति प्राप्त हो जाने से आचरण के आचार्य बनकर कर्म के प्रति निष्ठावान प्रवृत्ति में निरन्तर अभिवृद्धि सुनिश्चित हो जाती है।

जीवात्मा स्वयं के जीवन काल में आत्मानुभूति के गहन पक्ष से गुजरते हुए मर्यादित आचरण की उपयोगिता और महत्ता को आध्यात्मिक पुरुषार्थ हेतु अति आवश्यक स्वरूप में ग्रहण करते हुए आत्मिक दृष्टिकोण की आत्मीयता द्वारा धर्मगत आचरण के अनुष्ठान के प्रति निजी जीवन की संचेतना को महानतम कर्म के क्रियमाण में सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है। आत्मा के स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की उच्चता को जीवन का आधार स्तम्भ बनाकर स्वयं को गतिशील करते हुए आत्मा की सात्विक गति, सुमति और सद्‌गति की प्रासंगिकता को मर्यादित आचरण के संदर्भित स्वरूप की संज्ञान युक्त व्यावहारिकता का अनुपालन करना ही धर्मात्मा के निर्माण की दिशा में अग्रसर होने का कर्मगत जीवंत प्रमाण होता है।

आत्मिक परिष्कार द्वारा सृजनात्मक आयाम की उच्चता

जीवन के प्रति विशिष्ट सृजनात्मक समझ और सुदृढ़ सामन्जस्य की परिणिति सदा नित नूतन स्वरूप में सीखने की लालसा से सुसज्जित होती है जिसमें अनुभवी बनने की वास्तविक बोधगम्यता नैसर्गिक रूप से समाहित रहती है जो व्यक्तित्व को आत्मगत परिवर्तन के लिए आन्तरिक अभिप्रेरणा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वयं को सशक्त बनाने की कल्पना शक्ति मानव जाति के पास महानतम धरोहर के रूप में विद्यमान रहती है जिसका प्रस्फुटन समयानुसार विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत सृजनात्मक आयाम के रूप में प्रकट होता है जिसकी स्वीकारोक्ति नवाचार के समायोजन से निजता के साथ सर्व मानव आत्माओं द्वारा जीवन की आवश्यकता, अनिवार्यता एवं उपयोगिता के संदर्भ एवं प्रसंग में किया जाता है।

मानव जीवन की विराटता में सम्मिलित स्थूलता और सूक्ष्मता से सम्बन्धित परिवेश के मध्य संतुलित दृष्टि एवं दृष्टिकोण का श्रेष्ठतम सामंजस्य-निर्मित हो जाने पर ईमानदारी तथा पवित्रता के सानिध्य में गतिशील जीवन का उद्देश्य आत्म परिष्कार हेतु समर्पित हो जाता है जिसके परिदृश्य की विविधता में सृजनात्मकता के श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्र आयाम परिलक्षित होते रहते है। आत्मगत स्वभाव के अनुकूल स्वयं को परिपक्वता की गहन आत्मिक अनुभूतियों में परिवर्तित कर लेने की आत्मशक्ति का व्यावहारिक प्रयोग आत्म परिष्कार का मूलभूत केन्द्रीय भाव होता है जो सृजनात्मक स्वरूप से जुड़ाव उत्पन्न करके आत्महित के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहकर कल्याणकारी दृष्टिकोण की सार्थकता को सिद्ध करने में संलग्न हो जाता है। जीवात्मा द्वारा आत्म परिष्कार का धर्म निभाने की चैतन्यता नैसर्गिक रूप से सृजनात्मकता को एक नवीन आयाम प्रदान करती है, जिसमें कर्मगत श्रेष्ठता का सर्व हितकारी पक्ष विहंगम कल्याणकारी दृष्टिकोंण के मंगलकारी स्वरुप में निरंतर क्रियान्वित होता रहता है ।

पवित्रतम दृष्टि द्वारा पवित्रतम सृष्टि का स्वरूप

मानव जीवन की गतिशील प्रक्रिया में जीवात्मा द्वारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ के प्रति निरन्तर रूप से ही चिंतनशील रहकर आत्मगत स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव अर्थात् श्रेष्ठ, शुभ और पवित्र सुमति की दिशा में अग्रसर होने की आन्तरिक जिज्ञासु प्रवृत्ति अन्तर्मन को पूर्णतः निमित्त, निर्मल तथा निर्माण चित्त स्वरूप में निर्मित करके चेतना को निर्माण प्राप्ति का अधिकारी बना देती है। आत्म परिष्कार की स्थिति में स्वयं को स्थापित करने के लिए पवित्रतम कर्मों की गहन गति के ज्ञान की दार्शनिक पृष्ठभूमि की उच्चतम् अवस्था पर सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ तक स्वयं को पहुँचाने हेतु श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम कर्म को क्रियन्वित करने का दीर्घकालीन अभ्यास ही कर्मयोगी के विहंगम स्वरूप में आत्मगत चैतन्यता को रूपान्तरित करने और आत्मानुभूति कराने में सक्षम सिद्ध हो पाता है।

"हार मानने से पहले एक और कोशिश करें, सीखने के लिए हर तरह से तैयार रहें"

पवनपुत्र हनुमानजी के जीवन की सीख

"सुख पाना चाहते हो तो दूसरों को सुख दो, जैसा बीज बोओगे वैसी खेती पाओगे।"

संत तुकाराम, महापुरुष

सेमीनार आयोजित

गंगटोक। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मेफेयर कैसीनो में अहंकार को जानना और उसका प्रबंधन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके संगीता बहन (सिरी फोर्ट, दिल्ली) ने कहा कि अहंकार व्यक्ति के भीतर छिपी हुई एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो अनेक बार तनाव, असंतोष और संबंधों में दूरी का कारण बनती है। आत्मचेतना, विनम्रता और राजयोग ध्यान के अभ्यास द्वारा अहंकार पर विजय प्राप्त कर जीवन में संतुलन, शांति और सुख का अनुभव किया जा सकता है। बीके सोनम बहन, मेफेयर कैसीनो के अध्यक्ष फुर्बा रिनजिंग शेरपा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बच्चों का बढ़ाया उत्साह

विदिशा, मध्य प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर राजयोगी समर कैंप आयोजित किया गया। इसमें बच्चों को व्यक्तित्व विकास, मेडिटेशन, योग, मूल्य शिक्षा के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। कैंप में संयुक्त कलेक्टर शशि मिश्रा ने पहुंचकर बच्चों का उत्साह बढ़ाया और जीवन में सफल होने के लिए टिप्स बताए। समर कैंप में ब्रह्माकुमारी रेखा दीदी, ब्रह्माकुमारी रुक्मणी दीदी, बीके नन्दनी बहन, बीके अनु दीदी, बीके वीर भाई ने क्लासेस कराई और बच्चों को गाइड किया।

नैतिक मूल्यों का महत्व बताया

दुमका, झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ ओम शांति भवन नगर पालिका चौक द्वारा सात दिवसीय समर कैंप आयोजित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लेकर संस्कार, नैतिक मूल्य, व्यक्तित्व विकास, योग, ध्यान एवं रचनात्मक गतिविधियों का लाभ प्राप्त किया। समर कैंप का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं केक कटिंग के साथ किया गया था। सात दिनों तक चले इस विशेष शिविर में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। केंद्र प्रभारी बीके जयमाला दीदी, बीके रेखा दीदी ने बच्चों को राजयोग मेडिटेशन, सकारात्मक चिंतन, आत्मविश्वास, अनुशासन, नैतिक मूल्यों एवं श्रेष्ठ जीवनशैली की शिक्षा प्रदान की गई।

बच्चों को मेडिटेशन सिखाया

कामठी, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारी सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया। इसमें प्रो. बीके अपर्णा दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। बाल्यावस्था में प्राप्त श्रेष्ठ संस्कार ही उन्हें आदर्श नागरिक एवं जिम्मेदार व्यक्तित्व के रूप में विकसित करते हैं। सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके प्रेमलता दीदी ने बताया कैंप में योगाभ्यास, खेलकूद, चित्रकला, कहानी-कथन, भाषण, संगीत, नृत्य की शिक्षा के साथ रचनात्मक गतिविधियां कराई गईं।

भारत हमारे दिल में बसता है : डॉ. वोहरा

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।

भारतीय विदेश सेवा के पूर्व राजनयिक डॉ. दीपक वोहरा गुरुग्राम के भोरा कलां स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर' पहुंचे। इस दौरान उन्होंने भारत की सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रभक्ति और वैश्विक मंच पर देश की कूटनीतिक प्रगति को लेकर अपने विचार साझा किए। हिंदुस्तान हमारी माँ है, हम सब उसकी संतान समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. दीपक वोहरा ने कहा कि हम भारतवासी सिर्फ इसलिए नहीं हैं कि हम भारत की भौगोलिक सीमाओं के भीतर रहते हैं। हमारी असल पहचान यह है कि भारत हमारे दिल में बसता है। जिस तरह एक माँ की कई संतानें हो सकती हैं, ठीक उसी तरह हम करोड़ों संतानों की एक ही मां है और वह है हमारा हिंदुस्तान।'
पूर्व राजनयिक डॉ. वोहरा ने कहा कि आज भारत की विदेश नीति और कूटनीति इतिहास के सबसे बेहतरीन दौर से गुजर रही है। भारत दुनिया के बड़े फैसलों में एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है। महान रणनीतिकार आचार्य चाणक्य को याद करते हुए डॉ. वोहरा ने कहा आचार्य चाणक्य ने सदियों पहले एक अखंड, समर्थ और विश्व गुरु भारत का जो स्वप्न देखा था, आज का भारत उसी स्वप्न को हकीकत में साकार कर रहा है। हमारी कूटनीतिक ताकत और वैश्विक नीतियां चाणक्य नीति की आधुनिक झलक हैं।
डॉ. वोहरा ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज में सकारात्मकता, शांति और मानवीय मूल्यों के उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे केंद्र न केवल मानसिक शांति प्रदान करते हैं, बल्कि नागरिकों में नैतिक और राष्ट्रीय चेतना को भी जगाते हैं। ओम शांति रिट्रीट सेंटर के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने डॉ. वोहरा का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संस्थान के सदस्य उपस्थित रहे।

वैश्विक शांति में मीडिया की भूमिका विषय पर परिचर्चा आयोजित

शिव आमंत्रण, तिल्दा (छ.ग.)। हिंदी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ टिल्दा द्वारा मीडिया विंग के तहत आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह एवं 'वैश्विक शांति में मीडिया की भूमिका' विषय पर परिचर्चा कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार मधुकर द्विवेदी, प्रियंका कौशल, विशाल यादव, टिल्दा प्रेस क्लब अध्यक्ष मोती ज्ञान चंदानी, संरक्षक गौरी शंकर सैनी, छत्तीसगढ़िया पत्रकार महासंघ अध्यक्ष भ्राता गजेंद्र रथ गर्व एवं तिल्दा केंद्र प्रभारी बी.के. प्रियंका बहन उपस्थित रहे।

पीस वॉक और साइलेंट मेडिटेशन का आयोजन

शिव आमंत्रण, मकनपुर ,गाजियाबाद।

मकनपुर गाजियाबाद सेवाकेंद्र द्वारा पीस मी नेचर शान्ति मेरा स्वधर्म है प्रोजेक्ट के तहत पीस वॉक, साइलेंट मेडिटेशन का आयोजन किया गया। साथ ही शांति के लिए प्रतिज्ञा कराई गई। सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी नीलम बहन ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर सौ से अधिक भाई-बहन शामिल हुए। सभी ने बहुत सहज रीति से इस सेवा को पूरा किया और सभी ने प्रतिज्ञा भी किया कि हम खुद शांत रहेंगे और अपने आस पास वातावरण को भी शांत रखेंगे। सभी को राजयोग के माध्यम से शांति की अनुभूति कराई गई।

इंजीनियर और साइंटिस्ट विंग ने निकाली यात्रा

पर्यावरण संरक्षण एवं आपदा प्रबंधन अभियान यात्रा से किया जागरूक

शिव आमंत्रण, अटलादरा, बड़ोदरा।

अटलादरा से गुजरी पर्यावरण संरक्षण एवं आपदा प्रबंधन अभियान यात्रा के अनेक जागरूकता प्रोग्राम आयोजित किए गए। ब्रह्माकुमारीज़ अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से संस्था की इंजीनियर और साइंटिस्ट विंग के द्वारा पर्यावरण सुरक्षा और आपदा प्रबंधन विषय को लेकर लगभग 8 सदस्यों की टीम के साथ जागरूकता अभियान यात्रा निकल जा रही है जो 24 मई को शांतिवन आबू रोड से चलकर हिम्मतनगर अहमदाबाद से होती हुई वडोदरा पहुंची। इस यात्रा का समापन 12 जून को नागपुर में हुआ।

वर्तमान समय में विश्व के आगे चल रही चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के रूप में युद्ध के कारण अशांति, प्राकृतिक संतुलन और बढ़ते ऊर्जा संकट को देखते हुए जो भी पर्यावरण और दुर्घटनाओं संबंधी समस्याओं का सामना हमें करना पड़ रहा है और आगे करना पड़ सकता है, उनके प्रति व्यावहारिक रूप से जिम्मेदारी स्वीकार करने और मानसिक रूप से समाधान की दृष्टि से तैयार रहने के लिए लोगों को जागरूक और प्रेरित करना यात्रा का मुख्य उद्देश्य है।

यह यात्रा में मुख्य रूप से इंजीनियरिंग और साइंटिस्ट प्रभाग के चेयरपर्सन राजयोगी मोहन सिंघल, पानीपत स्थित ज्ञान मानसरोवर एकेडमी रिट्रीट सेंटर के डायरेक्टर बीके भारत भूषण भाई, माउंट आबू शांतिवन से वर्ल्ड रिन्यूअल मैगजीन के एडिटर बीके प्रोफेसर ओंकार भाई, दिल्ली से साइंटिस्ट इंजीनियरिंग एंड आर्किटेक्चर विंग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके पीयूष भाई, पानीपत से सीनियर राजयोग टीचर बीके ज्योति बहन, बलोत्रा राजस्थान से मोटिवेशनल स्पीकर और मैनेजमेंट ट्रेनर बीके अस्मिता बहन शामिल रहीं। यात्रा के संस्कारी नगरी वडोदरा में आगमन पर अटलादरा सेवाकेंद्र संचालिका बीके डॉ. अरुणा बहन, सह संचालिका बीके पूनम बहन द्वारा भव्य स्वागत, अभिनंदन किया गया।

इसके बाद कॉसमॉस प्राइवेट लिमिटेड, ट्रांसपेक सिलोक्स इंडस्ट्री, पानोली इंटरमीडिएट्स प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा म्युनिसिपल कॉरपोरेशन आदि संस्थानों में प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस | रेलवे स्टेशन पर लगाई व्यसनमुक्ति चित्र प्रदर्शनी

यात्रा से दिया व्यसनमुक्ति का संदेश

शिव आमंत्रण, जबलपुर/मप्र।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारी शिव स्मृति भवन द्वारा समाज को व्यसन मुक्त बनाने के दृढ़ संकल्प के साथ एक विशाल 'नशा मुक्ति जन जागृति यात्रा' (संदेश रैली) और रेलवे स्टेशन पर 'व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी' का भव्य आयोजन किया गया. इस अभियान में संस्था के बीके भाई-बहनों सहित शहर के गणमान्य नागरिकों और मुख्य अतिथियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई।

शिव स्मृति भवन नेपिएर टाउन जबलपुर से भव्य जन जागृति यात्रा का शुभारंभ हुआ। सफेद वस्त्रों में सजे सैकड़ों भाई-बहन हाथों में 'नशा मुक्त भारत - हमारा संकल्प', 'तंबाकू छोड़ें - स्वस्थ जीवन अपनाएं' और 'नशा त्यागो - जीवन संवारो' जैसी प्रेरणादायक तख्तियां और बैनर लेकर चल रहे थे।

रैली भंवरताल गार्डन के आसपास के प्रमुख मार्गों से होते हुए गुजरी, जिसने राहगीरों को नशे के खिलाफ जागरूक होने की प्रेरणा दी। जिसमें बीके वर्षा बहन, बीके भूमि बहन, बीके कविता बहन, डॉ. पुष्पा पांडे, डॉ लखन बैश्य, डॉ. एसके पांडे, डॉ. एसएस ठाकुर मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

रैली के समापन के साथ ही मुख्य रेलवे स्टेशन पर व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। इसका उद्देश्य यात्रियों और आम जनता को तंबाकू व अन्य नशीले पदार्थों के घातक दुष्परिणामों से रूबरू कराना था। प्रदर्शनी में चित्रों के माध्यम से दिखाया गया कि कैसे एक छोटी सी लत हंसते-खेलते परिवार को तबाह कर देती है और कैसे आध्यात्मिक शक्ति व राजयोग के द्वारा इस पर विजय पाई जा सकती है।

कार्यक्रम में सरद जेठी (एक्स रेल्वे बोर्ड मेम्बर), इफ्तिकार अली (चीफ यार्ड मास्टर जबलपुर), डॉ. एसके पांडे, बीके पूनम बहन, बीके नरेश, बीके वीरेन्द्र, इंजी परेश, बीके अनिल, बीके वर्षा बहन सभी ने चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद अपने विचार साझा किए।

भगवद्गीता ज्ञानलोक में 5 दिवसीय राजयोग तपस्या भट्टी

बीके सूरज भाई ने बताए योग साधना बढ़ाने के सरल उपाय

शिव आमंत्रण, हुबली, कर्नाटक।

ब्रह्माकुमारीज़ हुबली उप-क्षेत्र के निदेशक डॉ. बीके बसवराज राजऋषि और संयोजिका बीके निर्मला बहन के नेतृत्व में भगवद्गीता ज्ञानलोक में पांच दिवसीय अखंड राजयोग तपस्या भट्टी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे बीके सूरज भाई और राजयोगिनी बीके गीता बहन ने संबोधित किया। गुजराती समाज के अध्यक्ष, समाजसेवी एवं मजेठिया फाउंडेशन के संस्थापक जितेन्द्र मजेठिया ने राजयोगी बीके सूरज भाई का शॉल ओढ़ाकर और माला पहनाकर सम्मान किया। साथ में अग्रवाल समाज के मोहन लाल और राजयोगी डॉ. बीके बसवराज राजऋषि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में उत्कृष्ट समाजसेवा कर रहे प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों जितेन्द्र मजेठिया, सुप्रसिद्ध माइक्रोफिनिश कंपनी के मालिक तिलक विकमशी, अग्रवाल समाज के मोहनलाल और ग्लोबल रिसर्च एंड फाउंडेशन के संस्थापक श्रीधर दावस्कर को राजयोगी बीके सूरज भाई, राजयोगी डॉ. बीके बसवराज राजऋषि ने सम्मानित किया।

व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी से दिया संदेश

कालानी नगर, इंदौर। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते बीएसएफ इंदौर के पूर्व आईजी अशोक यादव, पूर्व राज्यमंत्री पंडित योगेंद्र महंत, भाजपा इंदौर संभाग प्रोटोकॉल प्रभारी घनश्याम काकाणी, गौ सेवा भारती अध्यक्ष सुरेश बिंगले, सेवा केंद्र संचालिका बीके जयंती दीदी, बीके सुजाता दीदी।

नशों से होने वाले दुष्परिणाम बताए

छतरपुर/हरपालपुर। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ग्राम उमरई में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके ब्रह्माकुमारी आरती बहन ने आत्मा की वास्तविक पहचान एवं परमात्मा के दिव्य संदेश पर प्रकाश डाला। बीके पूनम बहन ने नशों से होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला।

लोगों को व्यसन के लिए प्रेरित करें

नौगांव, छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारी द्वारा स्टेडियम में बच्चों को मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान के तहत व्यसन से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में बताया गया। बीके मोहिनी बहन ने कहा कि आपके संबंध संपर्क वाला कोई भी व्यसन करें तो तो उसे व्यसन छोड़ने के लिए जरूर कहें। व्यसन हमारे परिवार समाज एवं देश को भी प्रभावित करता है।

समस्तीपुर: नशा मुक्ति का लिया संकल्प

समस्तीपुर, बिहार। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर रेलवे स्टेशन पर तंबाकू निषेध प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें नशा मुक्ति का संकल्प लेते हुए हुए मंडल रेल प्रबंधक ज्योति प्रकाश मिश्रा, अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. श्रीप्रकाश, सीनियर डीएमई दुर्गेश कुमार सिंह, कृष्णा भाई, सविता बहन एवं ओम प्रकाश भाई।

कैदियों से नशे से दूर रहने का किया आह्वान

बिजावर, छतरपुर, मप्र। सब जेल में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम किया गया। इसमें बीके प्रीति दीदी ने कैदी भाइयों को नशे के दुष्परिणाम बताए और इससे दूर रहने का आह्वान किया। बीके छत्रसाल भाई ने भी संबोधित किया। सब जेल प्रभारी मुकेश मांझी ने ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की सराहना की।

ब्रह्माकुमारीज़ ने ग्वालियर में दो पार्क लिए गोद, नगर निगम के साथ किया एमओयू

विश्व पर्यावरण दिवस : ई-बाइक रैली में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सदस्य हुए शामिल

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र।

विश्व पर्यावरण दिवस पर सनवैली चौराहे से बाल भवन तक नगर निगम ग्वालियर द्वारा, ई - बाइक रैली का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनें इलेक्ट्रिक स्कूटी, इलेक्ट्रिक कार एवं ई रिक्सा के साथ शामिल हुए। रैली को ग्वालियर कलेक्टर रुचिका चौहान ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर नगर निगम कमिश्नर संघ प्रिय, अपर आयुक्त टी प्रतीक राव, नगर निगम के अन्य पदाधिकारी, ब्रह्माकुमारीज़ से बीके प्रहलाद भाई, सहित की शहर के बिभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं सदस्य शामिल हुए।

रैली के समापन पर नगर निगम के बाल भवन में रेडक्रॉस द्वारा आयोजित ब्लड डोनेशन कैंप में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई एवं बहनों ने ब्लड डोनेट भी किया। इसके बाद नगर निगम और ब्रह्माकुमारीज़ के बीच एमओयू साइन हुआ जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दो पार्को को गोद लिया गया। जिसमें साइन के दौरान नगर निगम कमिश्नर संघ प्रिय, एडिशनल कमिश्नर टी प्रतीक राव व ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से राजयोगी बीके प्रहलाद भाई उपस्थित थे। इसके साथ ही नगर निगम और शहर की अन्य संस्थाओं के बीच भी एमओयू साइन हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ से बीके नरेश, संजय, गजेंद्र अरोरा, संतोष बंसल, मनोज शर्मा, विजेंद्र, कपिल, सुरेन्द्र, नारायण, रूपेंद्र, विनोद, सुरेश, बाली, सुरभि, रोशनी, छाया, गीता, आरती, रजनी अशोक, कविता सहित अनेकानेक लोग उपस्थित थे।

सेवाकेंद्र पर मंत्री यादव ने किया पौधारोपण

दुर्ग (छत्तीसगढ़)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय के बघेरा स्थित आनंद सरोवर में गजेंद्र यादव (कैबिनेट मंत्री छत्तीसगढ़ शासन) द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर परिसर में करंज के पौधे का रोपण किया गया। साथ ही बघेरा से हाइवे को जोड़ने वाली नवनिर्मित सड़क के दोनों तरफ पौधे लगाए गए। ब्रह्माकुमारी चैतन्य प्रभा दीदी ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। प्रकृति हमारी आवश्यकता नहीं है, प्रकृति हमारा जीवन है और इसकी रक्षा करना हम सब का कर्तव्य है। दुर्ग की संचालिका रीटा दीदी ने पर्यावरण दिवस पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता रैली निकाली, पौधे बांटे, लोगों को कराया संकल्प

शिव आमंत्रण, भोपाल, मप्र। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता रैली निकाली गई। प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी ने बताया कि पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारी द्वारा प्रकृति परिवर्तन प्रोजेक्ट लांच किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत आने वाले तीन वर्ष तक लगातार जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण के लिए नियमित रूप से कार्यशालाएं और जागरूकता रैली का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान अधिक से अधिक पौधारोपण किए जाएँगे। प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने के लिए प्रेरित किया जाएगा एवं कचड़ा प्रबंधन पर नियमित रूप से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। यात्रा की मुख्य विशेषता यह रही कि इसमें शामिल होने वाले सभी भाई और बहनों ने पर्यावरण मित्र और प्रकृति प्रेमी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया। मिसरोद में सामान्य जनमानस को पर्यावरण का संरक्षण का संदेश देते हुए पौधे वितरित किए गए तथा सभी को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलवाई गई। इस मौके पर बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

पर्यावरण बचाने का संदेश

कामठी। विश्व पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के विभिन्न सेवा केन्द्रों पर पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के बीके महेंद्र भाई, सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रेमलता दीदी, माजी जिल्हा परिषद सदस्य दिनेश ढोले, माजी सभापती सेवक उईके, गुलाबराव डोणारकर ने संबोधित किया।

पौधारोपण किया

कालानी नगर, इंदौर। विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए संस्कृत भारती इंदौर जिला के पूर्व महासचिव जगदीश सत्रावाला, पिछड़ा वर्ग मोर्चा नगर महामंत्री महेश चावड़ा, सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी जयंती दीदी, ब्रह्माकुमारी सुजाता दीदी एवं अन्य भाई बहनें।

पर्यावरण बचाने का आह्वान

मालिया हाटीना, गुजरात। विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रकृति परिवर्तन विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके रूपा बहन, बीके मीता बहन तथा बीके गीता बहन ने पर्यावरण बचाने का आह्वान किया और समापन पर पौधारोपण किया गया।

स्थापना दिवस मनाया

करेली, मध्य प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन के 30 वर्ष पूर्ण होने पर पौधारोपण कर उत्सव मनाया गया। इस दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका सरोज दीदी, बीके साधना दीदी, बीके अनुपमा दीदी, बीके शिवानी दीदी, बीके निशा दीदी, बीके अंजली दीदी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

भीलवाड़ा, राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के पथिक नगर सेवाकेंद्र में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वैज्ञानिक देवेन्द्र त्रिपाठी, डॉ. डीएल काष्ट, डॉ. आरएस श्रीत्रिय, डॉ. एमएल जाटव, ओम असावा, ब्रह्माकुमारी इंदिरा दीदी, अमोलक भाई, अकरम भाई, शशिकला समदानी, लीला शर्मा, शंभू लाल शर्मा, फुलेंद्र भाई, लक्ष्मी लाल, नन्दलाल, सीताराम आदि ने पौधारोपण में भाग लिया। इस दौरान विभिन्न किस्मों के पौधे रोपित किए गए।

विश्व पर्यावरण दिवस

पर्यावरण की रक्षा प्रत्येक व्यक्ति की जागरूकता और सहभागिता से ही संभव है

शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड।

विश्व पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज, चौधरी बागान, हरमू रोड में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। संचालिका बीके निर्मला दीदी ने सभी को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई।

बीके प्रदीप ने कहा कि प्रकृति और मानव का संबंध अत्यंत गहरा है। पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की जागरूकता और सहभागिता से ही संभव है। उन्होंने सभी को अपने जीवन में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर चंद्रवंशी समाज के संगठन मंत्री सुनील कुमार चंद्रवंशी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक डॉ. नीरज कुमार सिन्हा, राँची विमानपत्तन के निदेशक विनोद कुमार, कंपनी सेक्रेटरी राँची चैप्टर की चेयरपर्सन रेशु मोदी, समाजसेवी सुलोचना सिन्हा तथा मुक्ति संस्था के अध्यक्ष एवं समाजसेवी प्रवीण लोहिया सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। अतिथियों ने पर्यावरण संरक्षण को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए अधिक से अधिक वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा प्लास्टिक के उपयोग को कम करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थितजनों ने पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छ वातावरण के निर्माण के लिए सामूहिक शपथ भी ली। समापन इस संकल्प के साथ हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय योगदान देगा।

वृक्ष मानव जीवन के सच्चे साथी हैं: बीके विद्या दीदी

खजुराहो, मप्र। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज द्वारा पौधारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। खजुराहो के त्रिलोखर धाम में पौधारोपण कर हरित वातावरण निर्माण का संदेश दिया गया। पर्यावरण संरक्षण की सामूहिक प्रतिज्ञा भी कराई गई, जिसमें सभी ने संकल्प लिया कि वे अधिक से अधिक वृक्ष लगाएंगे, प्रत्येक जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य रोपित करेंगे, प्लास्टिक के उपयोग को कम करेंगे तथा प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान देंगे।

बीके विद्या दीदी ने कहा कि वृक्ष मानव जीवन के सच्चे साथी हैं। वे हमें प्राणवायु, छाया, फल एवं जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। यदि हमें आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य देना है, तो वृक्षारोपण को जनआंदोलन बनाना होगा। कार्यक्रम में विशेष रूप से शासकीय संजय निकुंज उद्यान अधीक्षक खजुराहो श्याम बाबू प्रजापति, वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी राजनगर योगेश यादव, बीके राम, श्री बहन, बीके प्रमोद भाई, मस्तराम सरस्वती जूनागढ़ अखाड़ा, त्रिलोखर धाम महाराज, रजक समाज जिला अध्यक्ष मोहन रजक एवं बीके नीरज बहन ने भी पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बनाने की जरूरत है: वन मंत्री केदार कश्यप

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में पर्यावरण दिवस पर परिचर्चा आयोजित की गई। कार्यक्रम में वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप, वन विकास निगम के मैनजिंग डायरेक्टर प्रेम कुमार और ब्रह्माकुमारी रश्मि दीदी ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने की। चर्चा का विषय था -प्रकृति से प्रेरित, जलवायु और हमारे भविष्य के लिए।

वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि आज प्रकृति के साथ जुड़कर भविष्य को सुखदायी बनाने की जरूरत है। अगर हम प्रकृति के साथ नहीं जुड़ेंगे तो हमारा भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा। प्रकृति हमें बहुत सारी जीवनोपयोगी चीजें मुफ्त में देती है लेकिन हम उसकी कद्र नहीं करते। कोविड के समय पता चला कि जीवन के लिए आक्सीजन का कितना महत्व है? उन्होंने प्रधानमंत्री के एक पेड़ माँ के नाम अभियान का जिक्र करते हुए कहा कि यह मर्मस्पर्शी और प्रकृति को जोड़ने वाला अभियान है। वन विकास निगम के प्रबन्ध संचालक प्रेम कुमार ने कहा कि हमें पर्यावरण को बचाना है तो जंगल को बचाना होगा। रायपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि प्रकृति और मानव का बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य के विचारों का प्रकृति पर पड़ता है। वायु प्रदूषण के साथ ही मानसिक प्रदूषण को भी दूर करने की जरूरत है। बीके वनिषा दीदी ने कहा कि प्रकृति के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। संचालन बीके रश्मि दीदी ने किया। बच्चों ने नृत्य से पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया।

मन का पर्यावरण भी स्वच्छ रखें

सोनीपत, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज सेक्टर 15 पर पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस दौरान सेंटर इंचार्ज प्रमोद दीदी ने स्थूल के साथ सूक्ष्म अर्थात मानसिक तौर पर भी स्वयं के पर्यावरण को स्वच्छ बनाने की प्रेरणा दी। साथ ही सप्त दिवसीय कोर्स के बारे में बताया। सभी ने पौधारोपण भी किया।

नाटक से दिया संदेश

नरसिंहपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ दिव्य संस्कार भवन में पर्यावरण संरक्षण एवं नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जिला संचालिका बीके कुसुम दीदी ने कहा कि जीवनदायिनी धरती मां का संतुलन बिगड़ रहा है। विकारों, बुराइयों और व्यसनों का आंतरिक प्रदूषण युवा पीढ़ी और परिवारों को नष्ट कर रहा है। बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई लघु नाटिका आकर्षण का केंद्र रही।

प्लास्टिक मुक्त जीवनशैली अपनाएं

आगरा, उप्र। पर्यावरण दिवस पर आर्ट गैलरी म्यूजियम, न्यू सुरक्षा विहार सेवाकेन्द एवं ज्ञान सरोवर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। बीके मधु बहन, बीके माला बहन, बीके संगीता बहन, बीके गीता बहन ने पर्यावरण संरक्षण हेतु अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा प्लास्टिक मुक्त जीवनशैली अपनाने की प्रतिज्ञा कराई।

प्रकृति संरक्षण की प्रतिज्ञा

छतरपुर, मप्र। विश्व पर्यावरण पर मटकुली सेवाकेंद्र पर प्रकृति परिवर्तन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके कल्पना बहन, बीके आशा बहन ने प्रकृति संरक्षण पर विचार व्यक्त किए। बीके सुमन बहन ने प्रकृति संरक्षण एवं स्वच्छता की प्रतिज्ञा कराई।

स्वयं का परिवर्तन जरूरी

नौगांव/छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके नंदा बहन ने कहा कि प्रकृति के पांच तत्वों से मिलकर हमारा यह शरीर बना है जो इन्हीं तत्वों की मांग करता है, इसलिए हम सभी की जिम्मेवारी है इन तत्वों की रक्षा करना, पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना, प्रकृति परिवर्तन के लिए हमें सबसे पहले स्वयं का परिवर्तन करना है।

केंद्रीय मंत्री उइके और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष खंडेलवाल ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज़ का नशामुक्ति अभियान सभी के लिए प्रेरणादायक है: भाजपा प्रदेशाध्यक्ष

शिव आमंत्रण, बैतूल, मप्र।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर नशा मुक्ति जागरूकता रैली निकाली गई। रैली के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष व बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, भारत सरकार के जनजातीय मामलों के केंद्रीय राज्यमंत्री और स्थानीय सांसद डीडी उइके, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे तथा मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

समापन पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने ब्रह्माकुमारीज़ के नशा मुक्ति अभियान की सराहना करते हुए इसे सभी के लिए प्रेरणादायक बताया और उपस्थित सभी लोगों से अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र को नशे की बुराइयों से मुक्त बनाने हेतु सक्रिय योगदान देने का संकल्प करने को कहा।

केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उइके ने ब्रह्माकुमारीज के नशा मुक्ति अभियान एवं नैतिक जागरण शिविर की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए इसके लिए ब्रह्माकुमारीज के सदस्यों को साधुवाद दिया और इसे समाज के लिए अनुकरणीय पहल बताया। उन्होंने कहा कि हम सभी को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए, ताकि पूरे समाज को नशे से दूर किया जा सके। सेवा केंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने कहा कि व्यक्ति और उसका परिवार नशे के कारण बर्बाद हो जाता है, जो कि पूरे समाज के लिए बहुत घातक हैं। उन्होंने सभी से नशे से दूर रहने का संकल्प लेकर आध्यात्मिकता, नैतिक मूल्यों एवं राजयोग के माध्यम से स्वस्थ और खुशहाल जीवन अपनाने का आह्वान किया।

रैली का मुख्य आकर्षण नशे की जंजीरों में जकड़ी भारत माता की प्रेरणादायी झांकी रही, जिसने लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए नशे के दुष्परिणामों के प्रति जनजागरण का प्रभावशाली संदेश दिया।

बच्चों ने नुक्कड़ नाटक से बताए नशे के दुष्परिणाम

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर ज्ञानशिखर ओमशांति भवन से आमजन में नशे के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए व्यापक स्तर पर रैली निकाली गई, जिसका समापन पलासिया चौराहा 'आई लव इंदौर' के पास किया गया, जहां बहुत सुंदर व्यसन मुक्ति आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई।

इस दौरान संगोष्ठी में चीफ़ मेडीकल ऑफिसर डॉ. माधव हसानी ने कहा कि नशे के खिलाफ जन जागरूकता अति आवश्यक है। इसके लिए सरकार भी अलग-अलग प्रकार से लोगों को नशे से मुक्त करने का प्रयास कर रही है। इसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान का प्रयास सराहनीय है। राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कमेटी के अध्यक्ष डॉ. दिलीप आचार्य ने बताया कि तंबाकू में 700 प्रकार के केमिकल्स होते हैं जिसके कारण एक बार इसका सेवन कर लेने से ही लोग इसके शिकार हो जाते हैं, कई बार प्रयास करने के बाद भी छोड़ नहीं पाते। इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने भी संबोधित किया। बच्चों ने नुक्कड़ नाटक से नशे के दुष्परिणाम बताए।

राजकोट पंचशील सोसायटी सेवाकेंद्र पर श्रीमद् भगवत गीता ज्ञान त्रिदिवसीय ट्रेनिंग आयोजित

विषय परिस्थिति में समाधान का शास्त्र है श्रीमद् भागवत गीता

शिव आमंत्रण, राजकोट, गुजरात।

राजकोट पंचशील सेवाकेंद्र पर त्रिदिवसीय गीता ज्ञान ट्रेनिंग का आयोजन किया गया। इसमें कर्नाटक हुबली से पधारीं बीके वीणा बहन ने कहा कि भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ शास्त्र और विषय परिस्थिति में समाधान का शास्त्र श्रीमद् भागवत गीता ही है।

उन्होंने गीता के श्लोक का आध्यात्मिक अर्थ बताते हुए सभी को बार-बार रिवाइज कराया। बीके टीचर्स बहन सहित 150 भाई-बहनों ने इस ट्रेनिंग का लाभ लिया। उद्घाटन सत्र में राजयोगिनी भारती दीदी, ब्रह्माकुमारी माधवी बहन ने अपने विचार व्यक्त किए। राजकोट के नवनियुक्त मेयर नेहलभाई शुक्ल ने कहा कि ये शिक्षण जरूर समाज परिवर्तन में काम आएगा।

नशे से दूर रहने का संकल्प कराया

बहरागोड़ा, जमशेदपुर। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर बहरागोड़ा महाविद्यालय में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 200 विद्यार्थी और 10 प्रोफेसर लाभान्वित हुए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अंजू दीदी, प्राचार्य डॉ. सत्यप्रिय महालिक ने अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने का संकल्प कराया गया।

पर्यावरण दिवस मनाया

पनवेल। विश्व पर्यावरण दिवस पर हुतात्मा स्मारक गार्डन में पर्यावरण जनजागृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके तारा दीदी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है।

विधायक ने रोपे पौधे

हरिनगर, दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व पर्यावरण पर पंडित दीन दयाल वाटिका में हरिनगर विधायक श्याम शर्मा, बीके अनुसुईया दीदी, बीके स्नेहा दीदी एवं भाई-बहनों ने मिलकर पौधे लगाए। साथ ही लोगों को पर्यावरण बचाने का संदेश दिया।

पौधारोपण किया

गाडरवारा, मप्र। ब्रह्माकुमारी द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण किया गया। इस दौरान संचालिका ब्रह्माकुमारी उर्मिला दीदी, कदम संस्था के संचालक अजय खत्री, ब्रह्माकुमारी वंदना दीदी, ब्रह्माकुमारी अंजना दीदी एवं शहर के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेरा भारत-हरित भारत

राजगढ़, मध्यप्रदेश। विश्व पर्यावरण दिवस पर मेरा भारत-हरित भारत का संदेश देते हुए पौधारोपण करते हुए ब्रह्माकुमारी मधु दीदी, ब्रह्माकुमारी सुमित्रा दीदी एवं अन्य भाई-बहनें।

स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र का सशक्तिकरण अभियान का शुभारम्भ : एक हजार से अधिक जवानों- अधिकारियों ने लिया भाग

प्रत्येक कार्य कर्तव्य समझकर निष्ठा के साथ करें : पुलिस महानिदेशक

शिव आमंत्रण, नवा रायपुर, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सुरक्षा प्रभाग द्वारा राज्य में सुरक्षा बलों के मनोबल में वृद्धि करने तथा तनाव मुक्ति हेतु आयोजित विशेष अभियान का शुभारम्भ नवा रायपुर के शान्ति शिखर में किया गया। कार्यक्रम में पुलिस महानिदेशक अरुण देव गौतम, सीआईएसएफ के कमाण्डेन्ट मनिन्दर सिंह, बीएसएफ के कमाण्डेन्ट एसआर खान सहित बड़ी संख्या में सुरक्षाबलों के अधिकारी और जवान उपस्थित थे। विषय था स्व-सशक्तिकरण से राष्ट्र का सशक्तिकरण।

पुलिस महानिदेशक अरुण देव गौतम ने कहा कि मन में जब द्वन्द छिड़ा हो तो उसका समाधान गीता के माध्यम से प्राप्त होता है। मन बड़ा बलवान होता है। इसे बहुत अच्छी तरह से गीता में समझाया गया है। जिस दिन अपने मन को समझ जाएंगे उस दिन बहुत सारी दुविधाओं से मुक्त हो जाएंगे। कभी गुस्सा नहीं आए मन शान्त रहे यह बहुत बड़ी साधना है। प्रत्येक कार्य को कर्तव्य समझकर करें तो मन विचलित नहीं होगा। किसी से दुश्मनी निकालते हैं या मार देते हैं तो मन में पश्चाताप होता है किन्तु देशहित में दुश्मन को कर्तव्य समझकर मारेंगे तो मन में पश्चाताप नहीं होगा। अपने कार्य को पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ करें। योग में बुद्धि को जागृत रखें, सजग होकर कर्म करें और अपनी चेतना को बरकरार रखें तो आप जिन्दगी में कभी निराश नहीं होंगे कभी तनाव में नहीं आएंगे।

लाईफ कोच एवं ट्रेनर ई.वी. स्वामीनाथन ने कहा कि देश की रक्षा हम तब कर सकेंगे जब हम स्वयं सुरक्षित रहें और स्वयं की रक्षा के लिए शरीर और मन का स्वस्थ होना जरूरी है। अगर हमने अपने मन का ध्यान नहीं रखा तो कुछ समय बाद हृदयरोग और बाईपास की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए स्वस्थ जीवन शैली का अपनाना होगा ताकि मन के साथ-साथ शरीर भी स्वस्थ रहे। स्वास्थ्य के लिए व्यायाम बहुत महत्वपूर्ण है। जब से हम लोग योग दिवस मनाने लगे हैं तब से लोग ज्यादा हेल्थ कान्सियस हो गए हैं। सुबह-सुबह लोग पैदल चलते हैं लेकिन किस मानसिक अवस्था में वाकिंग कर रहे हैं वह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। उस समय खुशी से अच्छे विचारों में रमण करते हुए वाकिंग करें।

उन्होंने कहा कि जब आप ड्यूटी पूरी करके घर जाते हैं तो आफिस के तनाव को घर लेकर न जाएं। उन्होंने हर कार्य को बहुत खुशी से करने की सलाह देते हुए कहा कि हमारे जीवन में अगले क्षण क्या हो जाए कुछ भी निश्चित नहीं है इसलिए इस क्षण को खुशी के साथ वाह-वाह करके जीना सीखो।

क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कहा कि स्व सशक्तिकरण के लिए स्व की पहचान जरूरी है। प्रेम, सुख, शान्ति आदि आत्मा के मूल गुण है। जब हम धैर्यपूर्वक बहुत सोच-समझकर कोई कार्य करते हैं तब सफलता मिलती है।

सुरक्षा सेवा प्रभाग की गतिविधियों की जानकारी देते हुए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के ज्वाइन्ट डायरेक्टर कैप्टन शिव सिंह ने बताया कि प्रभाग 2001 में बना और इसकी प्रेरणा स्वयं फौज के अधिकारी ने दी। आज यह विंग समय-समय पर अभियान के द्वारा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अपनी सेवाएं दे रहा है। रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। ब्रह्माकुमारी आशा दीदी ने आभार प्रदर्शन किया। संचालन सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। बच्चों ने नृत्य नाटिका द्वारा सैनिकों के शौर्य और बलिदान को प्रदर्शित किया। इसमें एक हजार से अधिक जवान- अधिकारी मौजूद रहे।

स्व शक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण अभियान

मन से सशक्त होना भी आवश्यक है

शिव आमंत्रण, भिलाई, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा प्रभाग द्वारा रक्षित आरक्षी केंद्र दुर्ग से स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र का सशक्तिकरण अभियान का शुभारंभ किया गया। सबसे पहले शहीद आकाश राव गिरेपूंजे को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के ज्वाइंट डायरेक्टर कैप्टन शिव सिंह ने कहा कि फिजिकल ट्रेनिंग में हम सब दक्ष होते हैं लेकिन मन से स्ट्रांग सशक्त होना भी आवश्यक है। शांत मन और स्वस्थ शरीर के साथ देश की सुरक्षा में हमारा योगदान सर्वोपरि है। स्थिर शांत मन शक्तिशाली होता है। मन को शांत और बुद्धि को एकाग्र करना आवश्यक है, स्थिर शांत मन शक्तिशाली होता है। हम मन से कमजोर है तो परिस्थितियों हम पर भारी है। प्रकृति का नियम है शक्तिशाली कमजोर को प्रभावित करती है। हम उन चीजों को कंट्रोल करने की कोशिश करते हैं जो हमारे कंट्रोल में नहीं है, जिससे हमें तनाव का सामना करना पड़ता है। प्रकृति का नियम है कमजोर को शक्तिशाली प्रभावित करता है अगर मैं शक्तिशाली हूं तो मेरा प्रभाव कमजोर चीजों पर पड़ेगा इसीलिए मुझे अंदर से शक्तिशाली बनना है।

सुरक्षा सेवा प्रभाग के नेशनल कोऑर्डिनेटर शैलेंद्र सिंह ने कहा कि आध्यात्मिकता कठिन नहीं बहुत सरल है, अपने बारे में जानना ही आध्यात्मिकता है, हमारे अंदर आंतरिक शक्तियां हैं जिसे राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से हमारे व्यवहार और स्वरूप में लाना है। सेवानिवृत कर्नल वी. सती ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें सही गलत का फर्क बताकर श्रेष्ठ भाव से कम करने की प्रेरणा देती है। आपने कारगिल युद्ध के समय अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि आध्यात्मिकता कहती है कि दुख देना गलत है, लेकिन दुश्मन को खत्म करना देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। आध्यात्मिकता हमें सही और गलत का फर्क बताती है कि हम कर्म किस भाव से कर रहे हैं।

प्रेरक वक्ता बीके दीपा दीदी ने सभी अधिकारी-जवानों को होमवर्क दिया कि आप सभी रात्रि को सोने से पहले अपने पद, पोजीशन, चिंता, तनाव को परमात्मा को सौंपकर मैं परमात्मा का बच्चा हूं मेरी जिम्मेदारी आपकी 5 मिनट के अभ्यास करके ही सोये। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी प्राची दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। मोटिवेशनल ट्रेनर ई वी स्वामीनाथ जी ने बताया कि मन का भोजन अच्छे या बुरे विचार होते हैं हमारे विचार ब्रेन को पॉपकॉर्न की तरह एक-एक मिनट में स्विच बदलता है जितना ज्यादा स्विच होगा उतना ज्यादा तनाव होगा। निगेटिव विचार से मन की बैटरी जल्दी डिस्चार्ज हो जाती है। विचार शून्य हो जाना मेडिटेशन एकाग्रता नहीं है विचार रुकते नहीं है उन्हें दिशा देना पड़ता है ।

जवानों को दिए तनावमुक्ति के टिप्स

शिव आमंत्रण, कामठी, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान- स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण के नगर आगमन पर शहर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। अभियान का उद्देश्य सेना, अर्धसैनिक बलों, पुलिस तथा अन्य सुरक्षा से जुड़े जवानों में मानसिक दृढ़ता, आध्यात्मिक जागरूकता और सकारात्मक नेतृत्व का विकास करना है। जवानों और सुरक्षा कर्मियों में आत्मविश्वास एवं आत्मबल बढ़ाना। तनाव, चिंता और मानसिक दबाव को कम करना। अभियान में माउंट आबू से पधारे बीके दीपक भाई, बीके कमल भाई ने मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ बनाने के लिए प्रेरणादायी टिप्स बताए। सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रेमलता दीदी ने राजयोग की अनुभूति कराई। बीके हितेश भाई, बीके दत्ता भाई ने भी अपने विचार रखे।

एसपी कार्यालय में कार्यशाला आयोजित

कोहिमा। एसपी कार्यालय में "मां एक सुखी परिवार की नींव है" विषय पर प्रेरणादायी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 70 महिला पुलिस कर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने सहभागिता कर की। मुख्य वक्ता बीके रूपा बहन ने कहा कि एक मां परिवार की आधारशिला होती है। उनके प्रेम, संस्कार और त्याग से ही परिवार में सुख, शांति और सामंजस्य का वातावरण बनता है। उन्होंने प्रतिभागियों को तनावमुक्त रहने, आत्म-देखभाल को प्राथमिकता देने तथा मानसिक स्थिरता बनाए रखने के लिए आध्यात्मिकता और सकारात्मक चिंतन को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। आत्म-जागरूकता, भावनात्मक संतुलन और नियमित आत्मचिंतन व्यक्ति को आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे वह अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकता

तीन दिवसीय समर कैंप का आयोजन

कैंप में बच्चों ने सीखे जीवन मूल्य, आत्मविश्वास और अच्छे संस्कार

शिव आमंत्रण, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।

ब्रह्माकुमारीज के विश्व शांति धाम में तीन दिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया। शुभारम्भ राजयोगिनी सरोज बहन, ईशानी चाइल्ड केयर स्कूल की प्रधानाचार्या पूजा नारंग एवं मनीष नारंग द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया। समर कैंप में 100 से अधिक बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी सरोज बहन ने बच्चों को जीवन में श्रेष्ठ संस्कार अपनाने और निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। ब्रह्माकुमारी मधु बहन ने बच्चों के लिए विभिन्न शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक सत्र आयोजित किए। प्रथम दिन गतिविधियों, प्रेरणादायक वीडियो, सेल्फ रिफ्लेक्शन एवं राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से बच्चों को मानवीय मूल्यों एवं आत्मविश्वास का महत्व समझाया गया। दूसरे दिन कहानी, वीडियो, खेलों एवं मेडिटेशन द्वारा अच्छे संस्कार एवं शिष्टाचार पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। तीसरे दिन बच्चों को वीडियो के माध्यम से परमात्मा का परिचय कराया गया तथा आध्यात्मिक जीवन के महत्व पर प्रकाश डाला गया। अंतिम दिन आयोजित टैलेंट प्रतियोगिता में बच्चों ने नृत्य, गीत, कविता एवं अन्य प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। उपस्थित अभिभावकों एवं अतिथियों ने बच्चों की प्रतिभा और आत्मविश्वास की सराहना की।

समर कैंप के दौरान बच्चों को प्रतिदिन मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक होमवर्क भी दिया गया, जिससे वे सीखे गए मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपना सकें। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों, अभिभावकों, अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी गईं। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बीडी गाबा (निदेशक, नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल) एवं डॉ. देवेंद्र अरोड़ा (प्रधानाचार्य, नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल) उपस्थित रहे। अतिथियों द्वारा बच्चों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

उच्च न्यायालय में तनावमुक्त जीवन कार्यशाला आयोजित

इंदौर। जोनल मुख्यालय ओम शांति भवन, न्यू पलासिया द्वारा मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में सुरक्षा कर्मियों के लिए तनाव मुक्त जीवन कार्यशाला आयोजित की गई। प्रेरक वक्ता बीके नारायण भाई, बीके दुर्गा बहन ने तनावमुक्ति के टिप्स बताए। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अजय प्रताप सिंह, उप पुलिस अधीक्षक अजय सिंह, निरीक्षक कुंवर सिंह सहित सुरक्षा से जुड़े अधिकारी-कर्मचारियों ने भाग लिया।

हरिनगर, दिल्ली। समाज सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान- संगमः गौरवपूर्ण वृद्धावस्ता एवं सम्मानित जीवन को लेकर टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें मुंबई से पधारे अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता प्रो. ईवी गिरीश भाई, हरिनगर सबजोन की डायरेक्टर बीके शुक्ला दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके बिरेंद्र भाई, चंडीगढ़ से बीके पूनम दीदी, बीके सरिता दीदी ने ट्रेनिंग दी। हरिनगर सबजोन की समर्पित टीचर्स बहनों ने भाग लिया।

मन को सकारात्मक बनाने से जीवन बनेगा तनावमुक्त

गया, बिहार। ब्रह्माकुमारीज के सिविल लाइन सेवाकेंद्र पर आंतरिक खुशी तथा तनावमुक्त जीवन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारीं बीके डॉ. बिन्नी बहन ने कहा कि राजयोग ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने मन को सकारात्मक बनाकर तनावमुक्त एवं संतुलित जीवन जी सकता है। बीके राकेश भाई, सेंट्रल जीएसटी के सहायक आयुक्त शिशिर सौरव, सेवाकेंद्र संचालिका बीके शीला बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ओएनजीसी लिमिटेड के अध्यक्ष से की भेंट

लोधी रोड, दिल्ली। ओएनजीसी लिमिटेड के अध्यक्ष एवं सीईओ अरुण कुमार सिंह से प्रेरक वक्ता बीके पीयूष भाई और सेवाकेंद्र संचालिका बीके गिरिजा दीदी ने मुलाकात कर राजयोग ध्यान के बारे में बताया। साथ ही संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया।

भाटापारा, छग। सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बीके मंजू दीदी, सिंधी समाज के अध्यक्ष अनिल गिडवानी तथा समाज के प्रमुख सदस्य।

घुवारा/छतरपुर (मध्य प्रदेश)। लोधी समाज के अध्यक्ष पन्नालाल लोधी, श्रमजीवी पत्रकार संघ के ब्लॉक अध्यक्ष किशन कुशवाहा, डॉक्टर धीरेंद्र प्रताप को ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके नीतू दीदी।

सफाई अभियान में किया श्रमदान

पन्ना, मप्र। महाराज सागर तालाब सफाई अभियान में पन्ना प्रभारी बीके सीता बहन के नेतृत्व में बीके भाई-बहनों ने मदद के हाथ बढ़ाए और श्रमदान किया। इस मौके पर कलेक्टर उषा परमार, डीएफओ अनुपम शर्मा व वन विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक चिंतन कार्यक्रम संपन्न

कूचबिहार, प. बंगाल। ब्रह्माकुमारीज विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक चिंतन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें प्रेरक वक्ता बीके सचिन भाई ने प्रतिभागियों को टिप्स दिए। इस मौके पर सेन्टर प्रभारी बीके शम्पा बहन, समाज सेविका रीनकु बहन, विधायक अजय कुमार, माइक्रो गोल्ड के जनक एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त बी पोद्दार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : दो दिवसीय प्रोटोकॉल प्रशिक्षण शिविर आयोजित

राजयोग मन एवं कर्मेंद्रियों को नियंत्रित कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है: वसुधा दीदी

शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)।

हरियाणा योग आयोग, जिला प्रशासन, आयुष विभाग चरखी दादरी एवं ब्रह्माकुमारीज झोझूकलां के संयुक्त तत्वावधान में 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय योग प्रोटोकॉल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ब्रह्माकुमारीज प्रांगण में किया गया। शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। एडवोकेट सुरेंद्र पाल सांगवान ने कहा कि वर्तमान समय में मानवता और समाज को श्रेष्ठ दिशा देने के लिए योग एक रामबाण उपाय है। योग व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है व जीवन में संतुलन स्थापित करता है। राजयोगिनी बीके वसुधा बहन ने प्रतिभागियों को राजयोग ध्यान का अभ्यास करवाते हुए कहा कि राजयोग मन एवं कर्मेंद्रियों को नियंत्रित कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह तनावमुक्त एवं सुखद जीवन जीने की प्रभावशाली आध्यात्मिक विधि है। पंचायत समिति सदस्य गजेंद्र नंबरदार एवं कविता ने सभी से योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। योग शिक्षक बिशन सिंह आर्य एवं मनीषा यादव ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रोटोकॉल के अंतर्गत विभिन्न योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने कहा कि योग की महान परंपरा के कारण ही भारत विश्व में विशेष पहचान रखता है और विश्व गुरु कहलाया है।

सामाजिक कार्यकर्ता एवं अध्यापक मास्टर रविंद्र बादल ने कहा कि योग सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए आवश्यक है। यह शरीर को स्वस्थ तथा मन को मजबूत बनाकर जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है। योगवीर सांगवान ने भी स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली के लिए योग को अत्यंत आवश्यक बताया। मास्टर सुनील कुमार एवं संजू ने कहा कि योग स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सकारात्मक जीवन का आधार है। इस दौरान आयुर्वेदिक मेडिकल ऑफिसर डॉ. मनोहर बाजिया, बीके ज्योति बहन, मनीषा यादव, समाजसेवी संजू सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

मानसिक शांति, तनाव प्रबंधन और नशामुक्ति पर कार्यक्रम आयोजित

मधुपुर/जमशेदपुर। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विभिन्न शैक्षणिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक संस्थानों में आत्म जागरण, आध्यात्मिक सशक्तिकरण एवं परमात्म संदेश के प्रसार हेतु विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की गई। इनमें विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं आमजन को आध्यात्मिक जीवन मूल्यों से अवगत कराया गया। कार्यक्रमों का संचालन कोलकाता से पधारे महेश भाई, जमशेदपुर से पधारीं पायल बहन एवं प्रियंका बहन तथा मधुपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका सरिता बहन के मार्गदर्शन में स्नेहलता बहन एवं पूनम बहन के सहयोग से किया गया। इस दौरान मानसिक शांति एवं तनाव प्रबंधन, राजयोग ध्यान का परिचय एवं प्रायोगिक अभ्यास, नशा मुक्ति तथा सकारात्मक जीवनशैली जैसे विषयों पर विशेष कार्यशालाओं एवं जन-जागरूकता सत्रों का आयोजन किया गया।

डॉ. बिन्नी शख्सियत अवार्ड से सम्मानित

जयपुर, राज. । राजस्थान पत्रिका द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका डॉ. बीके बिन्नी बहन को शख्सियत अवार्ड) से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान मानवता के लिए शांति, आध्यात्मिक जागरूकता और ध्यान (मेडिटेशन) के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। समारोह में राजस्थान सरकार के मंत्रियों एवं गणमान्य अतिथियों ने डॉ. बी.के. बिन्नी को सम्मानित किया। डॉ. बीके बिन्नी बहन ने कहा कि राजयोग ध्यान व्यक्ति को आंतरिक शांति, आत्मबल और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

नेशनल प्रेस्टीज अवार्ड से सम्मानित

हुबली, कर्नाटक। ग्लोबल रिसर्च एंड फाउंडेशन अमेरिका द्वारा हुबली में नेशनल प्रेस्टीज अवार्ड समारोह आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि बॉलीवुड अभिनेत्री अमीषा पटेल और ग्लोबल रिसर्च एंड फाउंडेशन के संस्थापक श्रीधर दावस्कर ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, प्रेरक व प्रसिद्ध वक्ता और आध्यात्मिक मार्गदर्शक ब्रह्माकुमार सूरज भाई को उनकी अद्वितीय सेवा के लिए से सम्मानित किया गया। साथ ही हुबली उप-क्षेत्र के निदेशक ब्रह्माकुमार डॉ. बसवराज राजऋषि, हुबली उप-क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी निर्मला दीदी को भी उनकी विशेष सेवा और योगदान के लिए नेशनल प्रेस्टीज अवार्ड से सम्मानित किया गया।

फिल्म को मिला 15वां पुरस्कार

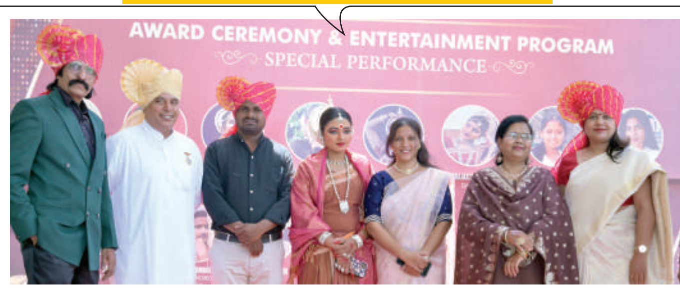

संभाजीनगर, औरंगाबाद । नगर में आयोजित छठा इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में फिल्म महामहिम दीदीजी मुर्मु को 15वें पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान मिस एशिया एवं वीरांगना ऑफ महाराष्ट्र-2025 गायत्री रोनकर, पाशा खान, संगीता कायड़े तथा औरंगाबाद सबज़ोन इंचार्ज शीला बहन द्वारा फिल्म की निर्माता प्रभा मिश्रा एवं लेखक-निर्देशक बीके पुम्पोष मिश्रा को प्रदान किया गया। आध्यात्मिक मूल्यों, नारी सम्मान एवं प्रेरणादायी जीवन संदेशों पर आधारित इस फिल्म को देश-विदेश के विभिन्न फिल्म समारोहों में लगातार सराहना मिल रही है। यह उपलब्धि सम्पूर्ण टीम एवं ओम शांति शांति प्रोडक्शन के लिए गौरव का विषय है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं पर ब्रह्माकुमारी प्रवीणा बहन सम्मानित

शिव आमंत्रण, भरतपुर, राजस्थान।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जिला प्रशासन एवं महिला अधिकारिता विभाग, भरतपुर द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं एवं समाज में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रह्माकुमारी प्रवीणा बहन को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह में संभागीय आयुक्त नलिनी कठोतिया, कलेक्टर कमर उल जमान चौधरी (आईएएस), पूर्व सांसद रामस्वरूप कोली, अतिरिक्त जिला कलेक्टर घनश्याम शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा, महिला अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक राजेश चौधरी तथा सिटी एडीएम राहुल सैनी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। इस मौके पर कार्यक्रम में अतिथियों ने कहा कि आध्यात्मिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी प्रवीणा बहन द्वारा किए जा रहे कार्य समाज के लिए प्रेरणादायक हैं। उनके प्रयासों से अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है तथा समाज में शांति, सद्भावना और संस्कारों का प्रसार हुआ है।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए

मो 9414172596, 8521095678

Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8740060231, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay

शिक्षक केवल ज्ञान का संचारक नहीं, बल्कि मूल्यों और संस्कारों का निर्माता भी होता है : सुधा दीदी

शिव आमंत्रण, मॉस्को, रुस।

मॉस्को स्थित मयाक मीरा रिट्रीट सेंटर इन दिनों आध्यात्मिकता और शिक्षा के सुंदर समन्वय का केंद्र बना हुआ है। ब्रह्माकुमारीज़ मॉस्को की निदेशिका सुधा दीदी द्वारा आयोजित विशेष सत्रों में भारतीय दूतावास विद्यालय के शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आत्मिक सशक्तिकरण, ध्यान एवं आत्म-प्रबंधन की गहन शिक्षाएं प्राप्त कीं।

सत्रों के दौरान शिक्षकों को राजयोग ध्यान, भावनात्मक संतुलन, आत्म-जागरूकता तथा विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने और उनके साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करने की कला के बारे में मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना था, ताकि वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकें।

सुधा दीदी ने कहा कि एक शिक्षक केवल ज्ञान का संचारक नहीं, बल्कि मूल्यों और संस्कारों का निर्माता भी होता है। जब शिक्षक स्वयं आंतरिक शांति, सकारात्मकता और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है, तभी वह विद्यार्थियों के जीवन में सार्थक परिवर्तन ला सकता है। ध्यान और आत्मचिंतन पर आधारित इन सत्रों ने शिक्षकों को गहरे आत्मिक अनुभव प्रदान किए।

प्रतिभागियों ने बताया कि इन सत्रों से उन्हें तनाव प्रबंधन, भावनात्मक संतुलन तथा शिक्षण कार्य में नई ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त हुई। कार्यक्रम से प्रभावित होकर भारतीय दूतावास विद्यालय के प्राचार्य बिघ्नेश्वर पटनायक ने ब्रह्माकुमारीज़ मॉस्को की निदेशिका सुधा दीदी एवं उनकी टीम को पत्र लिखकर हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि सत्रों का स्नेहपूर्ण वातावरण, व्यावहारिक मार्गदर्शन और आध्यात्मिक अनुभव शिक्षकों के लिए अत्यंत लाभकारी एवं प्रेरणादायी रहे। यह पहल शिक्षा और आध्यात्मिकता के समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनी।

वॉक फॉर पीस एंड योगा रैली निकाली

कतारगाम, गुजरात। वॉक फॉर पीस एंड योगा कार्यक्रम के तहत कतारगाम सेवाकेंद्र द्वारा नगर के प्रमुख मार्गों से पीस रैली निकाली गई। संचालिका बीके शारदा बहन ने हरी झंडी दिखाकर शांति यात्रा को रवाना किया। इसमें बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

तंबाकू खाना, कैंसर को पाना... नारा गूंजा

केरेडारी (झारखंड)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जन-जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का उद्देश्य लोगों को तंबाकू सेवन के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा नशामुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करना था। रैली में शामिल भाई-बहनों ने हाथों में तंबाकू विरोधी संदेशों से युक्त तख्तियां लेकर नगर क्षेत्र में जन-जागरूकता अभियान चलाया। पूरे मार्ग में तंबाकू छोड़ो, जीवन जोड़ो, स्वस्थ भारत का है सपना, तंबाकू मुक्त हो देश अपना तथा तंबाकू खाना, कैंसर को पाना जैसे नारों के माध्यम से लोगों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया गया। सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी सरिता दीदी ने कहा कि आज का युवा कल के भारत का निर्माता है, इसलिए उसे नशे की गिरफ्त से बचाना अत्यंत आवश्यक है। तंबाकू लाखों लोगों की मृत्यु का कारण बन रहा है।

सेवाकेंद्र का 16वां स्थापना दिवस मनाया

मोकामा, बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव शक्ति जगदम्बा भवन के प्रांगण में सेवाकेन्द्र का 16वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान सेवाकेंद्र से जुड़ी नियमित राजयोग का अभ्यास करने वाली माताओं, भाइयों को तिलक, ताज, पटका तथा माला पहनाकर सम्मानित किया गया। सेवाकेन्द्र संचालिक बीके निशा बहन ने कहा कि माताओं के दैवी स्वरूपा की स्मृति दिलाते हुए दैवी अलंकारों से उन्हें सुसज्जित किया गया। हर घर की माताओं के अन्दर दैवीगुण आ जाएं तो स्वर्णिम दुनिया की परिकल्पना जल्द ही संभव हो जाए। इस दौरान गायत्री परिवार से लालबाबू, बीके ज्योति बहन (बाढ) बीके रोशनी बहन (बड़हिया) गायक बीके अमरनाथ, पटना हाइकोर्ट के अधिवक्ता बीके अंकित आनंद सहित अनेक भाई-बहन उपस्थित रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

मन की आवाज और आत्मा का संगीत

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। मन की आवाज बहुत सूक्ष्म होती है। इतनी सूक्ष्म कि बाहरी दुनिया के शोर में कई बार हम उसे सुन ही नहीं पाते हैं। दिनभर विचारों की अनगिनत लहरों में मन उलझा रहता है। कभी भविष्य की चिंता, कभी अतीत की यादें, कभी परिस्थितियों की हलचल तो कभी इच्छाओं की दौड़। ऐसे में सवाल यह है कि क्या हमने कभी कुछ पल रुककर अपने ही मन की आवाज को सुना है? क्या हमने महसूस किया है कि इस शोर के पीछे एक ऐसा मधुर संगीत भी बज रहा है जो हमें हमारी वास्तविक पहचान, हमारी शक्तियों और हमारे श्रेष्ठ स्वरूप की याद दिलाता है?

मन विचारों की वह धरती है जहां हर पल नए संकल्पों के बीज अंकुरित होते हैं। जैसे किसान खेत में जैसा बीज डालता है, वैसी ही फसल प्राप्त करता है, वैसे ही मन में बोए गए विचार ही कुछ समय बाद हमारे संस्कारों और व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। यदि मन की भूमि पर श्रेष्ठ विचारों, शुभभावनाओं और सकारात्मक संकल्पों के बीज बोए हैं तो जीवन में आनंद, शांति और संतुष्टता के पुष्प खिलते हैं। लेकिन यदि मन में चिंता, भय, ईर्ष्या, क्रोध और निराशा के बीज पड़ गए तो वही धीरे-धीरे जीवन में अशांति के वृक्ष बन जाते हैं।

दरअसल, हर आवाज मन की नहीं होती और हर विचार हमारी वास्तविक पहचान नहीं होता। कई बार परिस्थितियों की आवाज, लोगों की अपेक्षाओं की आवाज और पुराने संस्कारों की आवाज इतनी तेज हो जाती है कि आत्मा की आवाज दब जाती है। आत्मा की आवाज हमेशा हमें ऊंचा उठाने वाली होती है। वह हमें याद दिलाती है कि मैं एक शक्तिशाली आत्मा हूं, शांति स्वरूप हूं, प्रेम और पवित्रता के संस्कारों से संपन्न हूं।

... तो मधुर संगीत निकलता है

मन और आत्मा का संबंध भी वीणा और उसके तारों जैसा है। जब वीणा के तार सही संतुलन में होते हैं तो मधुर संगीत निकलता है, लेकिन तारों में खिंचाव या ढीलापन आ जाए तो वही वीणा बेसुरी हो जाती है। इसी तरह जब मन आत्मिक स्मृति में स्थित रहता है तो विचारों में मधुरता, वाणी में मिठास और कर्मों में श्रेष्ठता दिखाई देती है। लेकिन जब मन बाहरी आकर्षणों और विकारों के प्रभाव में आता है तो जीवन का संगीत बेसुरा होने लगता है।

... तो मधुर संगीत निकलता है

कई बार हम कहते हैं कि मेरा मन अशांत है, मेरा मन परेशान है। लेकिन क्या हमने कभी यह सोचा कि आखिर इस मन को अशांति का भोजन कौन दे रहा है? मन को जिस प्रकार के विचार बार-बार देते हैं, मन उसी दिशा में चलने लगता है। इसलिए मन की पहरेदारी करना आवश्यक है। क्योंकि मन ही वह शक्ति है जो हमें महानता के शिखर तक ले जा सकती है और यही मन हमें कमजोरियों के अंधकार में भी ले जा सकता है। राजयोग वह साधना है जो मन को फिर से उसकी मूल अवस्था में लौटने का मार्ग दिखाती है। जब आत्मा स्वयं को शरीर से अलग एक चेतन्य शक्ति के रूप में अनुभव करती है और परमात्मा से संबंध जोड़ती है तो मन की व्यर्थ दौड़ धीरे-धीरे शांत होने लगती है। परमात्म शक्ति के संग से मन में नई ऊर्जा, नई उमंग और नई चेतना का संचार होता है। फिर परिस्थितियां वही रहती हैं लेकिन उन्हें देखने का हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है।

मन की आवाज सुनने के लिए मौन का अभ्यास जरूरी

जिस प्रकार गहरे समुद्र की सतह पर लहरें होती हैं लेकिन अंदर गहराई में शांति होती है, वैसे ही श्रेष्ठ आत्मिक स्थिति वाला व्यक्ति बाहर की परिस्थितियों के बीच भी अंदर से शांत और स्थिर रहता है। वह हर परिस्थिति को सीख और अवसर के रूप में देखता है। मन की आवाज को सुनने के लिए मौन का अभ्यास जरूरी है। व्यर्थ चिंतन के शोर को कम करना होगा। जब मन शांत होगा, तभी आत्मा का संगीत सुनाई देगा। यह संगीत हमें सदा सत्य, प्रेम, करुणा, पवित्रता और कल्याण की ओर प्रेरित करता है।

मन रूपी मंदिर को श्रेष्ठ संकल्पों से सजाओ

परमात्मा पिता हमें यही सिखाते हैं कि मेरे बच्चे! अपने मन रूपी मंदिर को श्रेष्ठ संकल्पों से सजाओ। अपने विचारों को इतना सुंदर बनाओ कि उनका प्रभाव केवल आप पर नहीं, बल्कि आपके संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति पर पड़े। क्योंकि मन की आवाज जब आत्मा से जुड़ जाती है तो जीवन में एक नया संगीत गूंजने लगता है। फिर चेहरे पर शांति की चमक, वाणी में मधुरता और कर्मों में महानता दिखाई देती है। यही आत्मा का सच्चा संगीत है, जो जीवन को साधारण से असाधारण बना देता है। जीवन को नई ऊंचाइयों की ओर ले जाता है।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

तनाव का समाधान परिस्थितियों को बदलने में नहीं, बल्कि अपने विचारों को बदलने में है

मन की शक्ति से तनाव मुक्त जीवन की ओर...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वास्तव में तनाव परिस्थितियों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया से उत्पन्न होता है। बाहरी दुनिया में चुनौतियां सदैव रहेंगी, लेकिन यदि मन स्थिर और शक्तिशाली है तो कोई भी परिस्थिति हमें विचलित नहीं कर सकती। सामान्यतः हम मानते हैं कि नौकरी का दबाव, आर्थिक कठिनाइयाँ, रिश्तों में मतभेद या भविष्य की अनिश्चितता तनाव का कारण हैं। लेकिन ये केवल परिस्थितियाँ हैं, कारण नहीं। वास्तविक कारण है- हमारे विचार। जब कोई परिस्थिति हमारी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं होती, तब हम चिंता, भय, क्रोध या असुरक्षा के विचार पैदा करते हैं। यही विचार धीरे-धीरे तनाव का रूप ले लेते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने फोन नहीं उठाया तो एक मन कहेगा, 'शायद वह व्यस्त होगा।' दूसरा मन सोचेगा, 'उसने जानबूझकर मेरा फोन नहीं उठाया।' परिस्थिति एक ही है, लेकिन विचार अलग-अलग हैं। परिणामस्वरूप भावनाएँ भी अलग होंगी। इसलिए तनाव का समाधान परिस्थितियों को बदलने में नहीं, बल्कि अपने विचारों को बदलने में है।

मन : सबसे बड़ी शक्ति

हम अपने शरीर की देखभाल के लिए समय निकालते हैं, लेकिन मन की देखभाल को अनदेखा कर देते हैं। जबकि शरीर को चलाने वाली शक्ति मन ही है। यदि मोबाइल की बैटरी कमजोर हो जाए तो हम उसे तुरंत चार्ज करते हैं। लेकिन जब मन की ऊर्जा समाप्त हो जाती है, तब भी हम लगातार कार्य करते रहते हैं। परिणामस्वरूप थकान, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा और तनाव बढ़ने लगता है। मन को चार्ज करने के लिए आवश्यक है कि हम प्रतिदिन कुछ समय आत्मचिंतन, सकारात्मक चिंतन और मेडिटेशन को दें। यही मानसिक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है।

अपेक्षाएँ : तनाव का बड़ा कारण

आज अधिकांश तनाव का कारण हमारी अत्यधिक अपेक्षाएँ हैं। हम चाहते हैं कि लोग हमारे अनुसार व्यवहार करें, परिस्थितियाँ हमारी इच्छानुसार चलें और जीवन में सब कुछ हमारी योजना के अनुसार हो। लेकिन वास्तविकता यह है कि हर व्यक्ति अलग है। उसके संस्कार, अनुभव और सोच भी अलग हैं। जब हम दूसरों को बदलने की कोशिश करते हैं और वे नहीं बदलते, तब निराशा और तनाव उत्पन्न होता है। स्वीकारभाव (Acceptance) तनाव को समाप्त करने की कुंजी है। स्वीकारभाव का अर्थ हार मानना नहीं है, बल्कि वास्तविकता को समझते हुए शांत मन से आगे बढ़ना है। जब हम लोगों को उनकी विशेषताओं और सीमाओं सहित स्वीकार कर लेते हैं, तब संबंधों में सहजता और मन में शांति आ जाती है।

वर्तमान में जीना सीखें

तनाव का एक बड़ा कारण अतीत और भविष्य के बीच झूलता हुआ मन है। अतीत की घटनाएँ अपराधबोध, पछतावा और दुख उत्पन्न करती हैं, जबकि भविष्य की चिंताएँ भय और असुरक्षा को जन्म देती हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान क्षण की सुंदरता हमसे दूर हो जाती है। जीवन केवल वर्तमान क्षण में घटित होता है। यदि मन वर्तमान में स्थिर हो जाए तो अधिकांश तनाव स्वतः समाप्त हो जाता है।

हर दिन स्वयं से पूछें-
'इस समय सब ठीक है?' अधिकांश स्थितियों में उत्तर होगा—'हाँ।'
तब समझ में आएगा कि हमारा तनाव वर्तमान से नहीं, बल्कि भविष्य की कल्पनाओं या अतीत की स्मृतियों से पैदा हो रहा है।

विचारों की गुणवत्ता बदलें

मन प्रतिदिन हजारों विचार उत्पन्न करता है। यदि अधिकांश विचार नकारात्मक, भययुक्त या आलोचनात्मक हैं तो तनाव बढ़ना स्वाभाविक है। हमें अपने विचारों की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। जैसे हम भोजन चुनते समय सावधानी रखते हैं, वैसे ही विचार चुनते समय भी सजग रहें।

दिन की शुरुआत इन सकारात्मक संकल्पों से करें-

» मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ।
» मैं परिस्थितियों का मालिक हूँ, दास नहीं।
» हर चुनौती मुझे मजबूत बना रही है।
» मैं सभी के प्रति शुभभावना रखता हूँ।
» जो हुआ, वह ठीक था; जो हो रहा है, वह ठीक है; जो होगा, वह भी कल्याणकारी होगा।

ऐसे संकल्प मन को शक्ति देते हैं और तनाव की जगह विश्वास एवं स्थिरता विकसित करते हैं।

मानसिक स्वच्छता भी आवश्यक

आज का मनुष्य सूचना से भर गया है, लेकिन आंतरिक शांति से खाली होता जा रहा है। समाचार, सोशल मीडिया और निरंतर नकारात्मक सूचनाएँ मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। जिस प्रकार हम शरीर के लिए शुद्ध भोजन चुनते हैं, उसी प्रकार मन के लिए भी शुद्ध सूचना चुननी चाहिए। सुबह उठते ही मोबाइल देखने के बजाय कुछ मिनट मौन, प्रार्थना या सकारात्मक अध्ययन में बिताएँ। रात को सोने से पहले भी नकारात्मक सामग्री देखने से बचें। मन को जो सामग्री मिलेगी, उसी प्रकार के विचार वह उत्पन्न करेगा।

मेडिटेशन: तनावमुक्त जीवन की संजीवनी

राजयोग मेडिटेशन तनावमुक्त जीवन का एक सरल और प्रभावी माध्यम है। यह केवल आँखें बंद करने का अभ्यास नहीं, बल्कि आत्म-जागरूकता की प्रक्रिया है। जब व्यक्ति स्वयं को शरीर नहीं, बल्कि एक शांत, शक्तिशाली और दिव्य आत्मा के रूप में अनुभव करता है, तब उसके भीतर स्थिरता और आत्मविश्वास विकसित होता है। राजयोग हमें परमपिता परमात्मा शिव से मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करना सिखाता है। यह शक्ति मन को नकारात्मकता से मुक्त कर सकारात्मकता से भर देती है।

नियमित मेडिटेशन के लाभ- मानसिक शांति में वृद्धि, चिंता और भय में कमी, निर्णय क्षमता में सुधार, संबंधों में मधुरता, आत्मविश्वास में वृद्धि, भावनात्मक संतुलन,

कार्य-जीवन संतुलन की आवश्यकता

आज कई लोग सफलता की दौड़ में स्वयं को खो रहे हैं। उपलब्धियाँ बढ़ रही हैं, लेकिन संतुष्टि घटती जा रही है। सफलता और खुशी दो अलग-अलग बातें हैं। यदि सफलता के साथ शांति नहीं है, तो वह अधूरी है। जीवन में कार्य आवश्यक है, लेकिन परिवार, स्वास्थ्य, विश्राम और आध्यात्मिकता भी उतनी ही आवश्यक है। संतुलित जीवन ही तनावमुक्त जीवन का आधार है। प्रतिदिन कुछ समय स्वयं के लिए अवश्य निकालें। यह समय आत्मसंवाद, ध्यान, सकारात्मक अध्ययन या प्रकृति के साथ बिताया जा सकता है। कई बार तनाव का कारण वर्तमान नहीं, बल्कि मन में संचित पुराने दर्द होते हैं। किसी व्यक्ति के प्रति नाराजगी, शिकायत या कटु स्मृतियाँ हमें भीतर से कमजोर करती रहती हैं।

समस्या- समाधान

रोज सुबह उठते ही खुद को श्रेष्ठ स्वमानों से भरपूर कर दें

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.।

हम समय के उस दौड़ पर पहुंच गए हैं बाबा ने बहुत पहले कह दिया था जब कल्प का अंत समय बहुत नजदीक आएगा तो सभी के कर्म-विकर्म जागृत होंगे। रात को सोने नहीं देंगे, उसे मानसिक रोग बढ़ जाएगी और ये दुनिया बुरी हालत में पहुंच जाएगी। ज्यादा सोचने की आदत भय पैदा कर रही है। भय संसार को अपनी जकड़ में लेता जा रहा है। जो अपने को शिव शक्ति मानेगा वो शिव शक्ति बन जाएगा और जो नहीं मानेंगे वो नहीं बनेंगे। बाबा के सीधे-सीधे सिद्धांत हैं- जैसी स्मृति-वैसी स्थिति। हमें व्यर्थ के इस तूफान से बचना है। व्यर्थ का तूफान बढ़ता ही जा रहा है आजकल। बहुतों को समझ ही नहीं आता है क्यों हो रहा है ये हमारे साथ। अगर ये भी समझ नहीं आएगा तो समाधान बिलकुल नहीं हो पाएगा। जिन्होंने जीवनभर व्यर्थ सुना है, जिनकी रुचि बातों में बहुत रही है, जीवन ईर्ष्या द्वेष में बिताया है वो अब व्यर्थ के शिकार हैं। जिन्होंने बाबा के पास आकर भी परचिंतन, परदर्शन में समय गंवाया है, जिन्होंने अपने को देखने के बजाय दूसरों को देखने में अनमोल समय बिता दिया वो अब व्यर्थ के शिकार होते जा रहे हैं। जिसके बारे में दुनिया में कोई नहीं जानती, न जान सकती जब व्यर्थ द्वारा आत्मा कमजोर हो जाती है, मन कमजोर हो जाता है, तब भटकती आत्माएं भी प्रभाव डालने लगती हैं। जो पावरफुल है उनके पास नहीं आतीं, लेकिन जिन्होंने व्यर्थ के कारण अपने को बहुत निर्बल कर दिया ये आत्माएं प्रभाव डालती हैं।

हर संकल्प में एनर्जी है...

व्यर्थ, ज्यादा सोचने से बीमारियां बहुत बढ़ रही हैं। हमारे हर संकल्प से एनर्जी पैदा होती है। बुरी संकल्पों से बुरी जो ब्रेन में जाती हैं और सबकुछ नष्ट करने लगती हैं। अच्छे संकल्पों से अच्छी एनर्जी और अच्छे संकल्प हमारे पास हैं। संसार में तो अच्छे संकल्पों का पता ही नहीं लोगों को। बस यही कह देते हैं पॉजीटिव सोचो पर क्या ये तो पता ही नहीं है। हर संकल्प से एनर्जी पैदा हो रही है। सबसे अच्छे संकल्प हैं स्वमान के। मैं विश्व कल्याणकारी हूं। हम विश्व कल्याणकारी हैं तो हमारे वाइब्रेशन, बोल, दृष्टि सब विश्व का कल्याण करेगी। अगर वाचा से हम दूसरों को दुख देते हैं तो हम अपने भी कल्याणकारी नहीं, विश्व के भी कल्याणकारी नहीं। स्वमान के संकल्पों को सबको बढ़ाना है।

उठते ही स्वमान दें...

विचार करें सभी हमारा अनमोल समय कैसे बीत रहा हैं। सवेरे ही अपने अंदर स्वमान भर दें बहुत सारे। आंख खुलते ही हमें यह देखना है हमारे संकल्प इधर-उधर न चले जाएं। अगर पहले मिनट में हमारे संकल्प इधर-उधर भटक गए तो कंट्रोल करना मुश्किल होगा। सवेरे उठते ही स्वमान की माला फेरना शुरू करो। मैं इस संसार में बहुत भाग्यवान हूँ। मैं महान आत्मा हूं। मैं राजऋषि हूं। मैं शिव शक्ति हूं। मैं ईस्ट देवी हूं। मैं विश्व कल्याणकारी हूं। मैं विजयी रतन हूं। मैं विघ्न विनाशक हूं। मास्टर सर्वशक्तिमान हूं। मैं पूर्वज हूं। मैं परम पवित्र आत्मा हूं। धीरे-धीरे इसका नशा चढ़ेगा। दो चार स्वमान भी अगर याद आ गए तो उससे ऐसा नशा चढ़ेगा कि और सब संकल्प शांत हो जाएंगे। ये नशा आवश्यक है व्यर्थ को ख़त्म करने के लिए। हमारा ईश्वरीय नशा सदा के लिए मन को शांत कर देगा। व्यर्थ सुनना, देखना, बोलना इनसे अपनेआप को बचाना है। स्वमान द्वारा समर्थ संकल्पों से अपने आप को भरपूर करना। ऐसा योग अभ्यास से हम दूसरों को मदद कर सके। जिसे सुबह योग करने में कठिनाई होती है वो शाम को बैठकर एक घंटा अच्छे से योग करें और अपने योग की प्लानिंग करें कि हम कैसे कर्मों में अच्छी स्मृतियों में रह सकते हैं। स्मृति स्वरूप होना ही योग युक्त होना है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 June. 2026
» प्रकाशक व मुद्रक: करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादक: बीके कोमल » संपादक: बीके पुष्पेन्द्र